2

हर प्रकार की आत्मिक आशिषें और कलीसिया का उद्देश्य

(1:3-14)

अपने भाइयों के नाम पत्र का आरम्भ करते हुए पौलुस ने ''मसीह में'' असीमित आशिषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया (1:3-14)। यूनानी भाषा के नये नियम में एक ही वाक्य में पौलुस ने पवित्र लोगों के लिए हर प्रकार की आशिषें देने के लिए परमेश्वर की स्तुति की और इन आशिषों में से सात के करीब को गिनाया (सम्पूर्णता को दर्शाता हुआ अंक)। हर आशीष परमेश्वर को महिमा देने के लिए बताई गई (देखें 1:6, 12, 14)। मनुष्य के उद्धार के सम्पूर्ण कार्य के लिए स्तुति में पौलुस ने सारे परमेश्वरत्व को शामिल किया। उसका स्तुतिगान परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा में केन्द्रित था। क्योंकि परमेश्वर की मंशा में तीनों ही शामिल हैं।

मसीह में चुने हुए (1:3, 4)

[3]हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, कि उस ने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। [4]जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।

आयत 3. हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो। ये शब्द पौलुस के स्तुतिगान का आरम्भ हैं, जो आयत 14 तक जारी रहता है। ''धन्यवाद हो'' *eulogētos* का अनुवाद है और विशेष रूप से परमेश्वर के लिए लागू होता है, मनुष्य पर कभी नहीं।[1] यह इस प्रकार से मनुष्य के लिए नहीं हो सकता। इस शब्द का उचित रूप में अर्थ है ''की स्तुति।''[2] मनुष्य के लिए परमेश्वर के बड़े उद्देश्य के कारण, जिसकी बात पौलुस इस आयत में करने लगा, वह हमारी स्तुति के योग्य है।[3]

परमेश्वर को ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर और पिता'' कहा गया है जो कि थोड़ा अटपटा है। यीशु आम तौर पर परमेश्वर को ''मेरा पिता'' कहता था। परन्तु उसने उसे ''मेरा परमेश्वर'' बहुत कम कहा (देखें मत्ती 27:46; यूहन्ना 20:17)। पौलुस ने यहां पर दोनों ही पदनामों का इस्तेमाल किया: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर'' और ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के ... पिता।'' यीशु ने चाहे अपने लिए हो या अपने चेलों के लिए ''हमारा परमेश्वर'' या ''हमारा पिता'' कभी नहीं कहा। क्योंकि परमेश्वर के साथ उसका सम्बन्ध निराला है। नमूने की प्रार्थना में यह एक अपवाद लगता है, क्योंकि यह प्रार्थना चेलों ने करनी थी न कि यह यीशु की प्रार्थना थी (मत्ती 6:9)।

यूहन्ना रचित सुसमाचार की भूमिका (1:1-18) में कहा गया है कि देहधारी होने वाला वचन आदि में पहले से था। इसके अलावा वह वचन परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हुए, परमेश्वर के साथ था। (वह ''परमेश्वर के साथ आमने-सामने''[4] था और उसके साथ उसकी सक्रिय सहभागिता थी।) वचन परमेश्वर *था*। (वह *एक ईश्वर* या *परमेश्वर* नहीं बल्कि *परमेश्वर* था जिसमें सभी ईश्वरीय गुण थे।[5]) फिलिप्पियों 2 में पौलुस ने मसीह को ''परमेश्वर के स्वरूप में'' होने वाले के रूप में दिखाते हुए मसीह के स्वभाव को बताया (आयत 6)। ''स्वरूप'' शब्द ''परमेश्वर के गहरे अस्तित्व में यानी जो कुछ वह अपने आप में हैं, वह सब'' के अर्थ वाले शब्द *morphē* का अनुवाद है।[6] ''होकर'' *huparchō* का अनुवाद है और दिखाता है कि यीशु उसी स्वभाव में बना रहा जो अपने देहधारी होने से पहले उसका था।[7] ईश्वरीयता का स्तंभ होने के कारण मसीह में परमेश्वर के साथ बराबरी पर विचार नहीं किया जिसे पाने का उसे अधिकार था। यह जो परमेश्वर के तुल्य था, इसने अपने आपको स्वर्ग की महिमा से खाली कर लिया और थोड़ी देर के लिए शरीर में आ गया और ईश्वरीयता और मनुष्यता का सम्पूर्ण मेल बन गया।

यीशु परमेश्वर है, तो फिर परमेश्वर किस अर्थ में उसका परमेश्वर है? ''मसीह के मानवीय स्वभाव के अनुसार, परमेश्वर उसका परमेश्वर है।''[8] मसीह के काम के द्वारा, वह हमारा भी परमेश्वर है। पूरे अनन्तकाल से, परमेश्वर उसका ''पिता'' है जो ''देहधारी हुआ और ... हमारे बीच में डेरा किया'' (यूहन्ना 1:14)। यीशु ''हमारा प्रभु'' है, इस कारण परमेश्वर हमारा भी पिता है, क्योंकि गोद लिए जाने के द्वारा हम उसकी संतान बन जाते हैं (देखें इफिस्सियों 1:5)। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि यीशु और पिता के रूप में परमेश्वर के बीच का सम्बन्ध निराला है।

> हमारे प्रभु यीशु मसीह को आश्चर्यकर्म के द्वारा गर्भ में आने और मुर्दों में से जी उठने के द्वारा पुत्र नाम दिया गया था (लूका 1:35; रोमियों 1:3, 4)। पिता के साथ उसका सम्बन्ध निराला था, क्योंकि वह पिता का अकेला इकलौता था (यूहन्ना 1:14, 18)। इब्रानियों का लेखक भजन संहिता 2:7 में से दोहराता है, ''तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ,'' और इसे बहुत सम्भव यीशु हमारे प्रभु के जन्म से मिलाता है (इब्रानियों 1:5)। पौलुस ने अन्ताकिया में यहूदियों को दिए गए अपने उपदेश में इसी उद्धरण का इस्तेमाल किया और इसे पुनरुत्थान के साथ जोड़ा (प्रेरितों 13:33)। फिर इब्रानियों का लेखक पुत्रत्व को आश्चर्यकर्म के द्वारा उसके गर्भ में आने के तथ्य से जोड़ता है; प्रेरितों के काम, इसका प्रमाण है।[9]

यीशु परमेश्वर का ''इकलौता पुत्र'' (1 यूहन्ना 4:9) इस अर्थ में है कि अनन्तकाल से पिता के साथ केवल उसी का अस्तित्व था और फिर उसने जैसा वह था एक कुंवारी से जन्म लिया। यीशु ने इस विलक्षण अस्तित्व की ओर संकेत किया, जब उसने मरियम से कहा, ''मुझे मत छू क्योंकि मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया, ... *मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं*'' (यूहन्ना 20:17)। मसीह के मनुष्य होने ने क्रूस पर से पुकारा, ''हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे छोड़ दिया?'' (मत्ती 23:46); परन्तु उसके ईश्वरीय भाग ने कहा, ''हे पिता, मैं अपनी आत्मा तेरे हाथों में

सौंपता हूं: और यह कहकर प्राण छोड़ दिए'' (लूका 23:46)।

आयत 3. परमेश्वर सब लोगों को शारीरिक आशिषों से अशीष देता है क्योंकि ''वह सब प्राणियों को आहार देता है'' (भजनसंहिता 136:25) और क्योंकि वह ''धर्मी और अधर्मी दोनों पर मेंह बरसाता है'' (मत्ती 5:45)। परन्तु **आत्मिक आशीष** उन्हीं के लिए हैं जो **मसीह में** हैं। ये आत्मिक आशिषें आत्मिक लोगों के लिए हैं, जो आत्मिक क्षेत्र में रहते हैं क्योंकि गोद लिया जाना मसीही लोगों को ''मसीह में'' रहने के योग्य बनाता है। (इस पाठ में '' 'मसीह में' होने की आशिषें और लाभ'' चार्ट देखें।)

स्वर्गीय स्थानों जहां ये आशिषें मिलनी हैं, के लिए शब्द (*epouranios*) है और मूल में यह ''स्वर्गीय'' ही है, जिसमें ''स्थानों'' शब्द अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है।[10] इफिसियों में यह शब्द पांच बार मिलता है (1:3, 20; 2:6; 3:10; 6:12) और केवल पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया गया है, जिसने कहा कि ''स्वर्गीय'' वहां हैं, जहां मसीह कलीसिया के सिर के रूप में परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है (1:20-22)। ''स्वर्गीय'' वहां है, जहां मसीह में हैं उसके साथ है (2:6) जहां कलीसिया परमेश्वर का ज्ञान प्रकट करती है (3:10) और जहां हम बुराई की आत्मिक शक्तियों से लड़ते हैं (6:12)। ये शब्द अधिकतर परमेश्वर के निवास को पूरे आत्मिक क्षेत्र के रूप में नहीं बताता। ''स्वर्गीय'' ही हैं जहां परमेश्वर उन को जो मसीह में हैं अनुग्रहपूर्वक सब प्रकार की आत्मिक आशिषें देता है।

आयत 4. पहले आत्मिक आशीष जिसका उल्लेख किया गया है वह यह है कि **उसने हमें ... उस में चुन लिया**। ''चुन लिया'' शब्द *eklegomai* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''चुनना।'' नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल हर जगह मध्य स्वर में किया गया है, जिसका अर्थ ''किसी व्यक्ति/वस्तु को अपने लिए चुनो।''[11] इस आयत में चुनने वाला परमेश्वर है; वह अपने लिए चुनता है, या ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए उसकी एक प्राथमिकता है। जिस प्रकार से परमेश्वर ने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए इस्राएल को चुना (प्रेरितों 13:17) और मसीह ने ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए प्रेरितों को चुना (लूका 6:13; यूहन्ना 15:16-19), वैसे ही परमेश्वर ने हमें (अर्थात, पौलुस और उन सब पवित्र लोगों को जो ''मसीह में'' विश्वासी हैं; 1:1) ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए चुना है। क्या परमेश्वर का यह चयन जान-बूझकर किसी को अनन्त जीवन के लिए और अन्यों को अनन्त मृत्यु के लिए चुनना है? निश्चय ही अपनी सम्प्रभुता में परमेश्वर अपने लिए कुछ काम करने के लिए किसी विशेष व्यक्ति को चुन सकता है। उसमें इस्राएल जाति का पिता होने के लिए किसी और को चुनने के बजाय अब्राहम को चुन लिया। मसीहा की वंशावली में होने के लिए उसने ऐसाव के स्थान पर याकूब को चुन लिया और मसीहा को लाने के लिए उसने अन्यजातियों को छोड़ इस्राएल को चुन लिया। विशेष कार्यों को पूरा करने के लिए विशेष लोगों को चुनने का अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर को दूसरों की परवाह नहीं है।

इसी प्रकार से परमेश्वर ने अलग-अलग लोगों को अलग-अलग गुण या योग्यताएं दी हैं। कौन कहेगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर यह गुण देता है? कौन संदेह करेगा? परन्तु अनन्त उद्धार के मामले में परमेश्वर मनमानी करके यह आदेश नहीं देता कि कुछ लोगों का उद्धार हो जाए और अन्य लोग चाहे जो करें या जो चाहे करने से बचें नाश होंगे। परमेश्वर उद्धार की पेशकश सबके लिए करता है (तीतुस 2:11); जिसमें सबको परमेश्वर के पास आकर उसके अनुग्रह को

स्वीकार करने को कहा जाता है (देखें मत्ती 11:28; प्रकाशितवाक्य 22:17)। मसीह में चुने हुए लोगों में होने या होने की पसन्द प्रत्येक व्यक्ति की अपनी है। परमेश्वर ने आदेश दिया है कि मसीह में सब लोग उद्धार पाएं, परन्तु वह हमें पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में मसीह में बपतिसमा लेने का निर्णय लेने या न लेने की अनुमति देता है (रोमियों 6:3)। सुसमाचार की आज्ञा मानने वाला व्यक्ति मसीह में है और चुने हुए लोगों में है। पतरस उनकी बात करता है जो ''... परमेश्वर पिता के भविष्यज्ञान के अनुसार, आत्मा के पवित्र करने के द्वारा आज्ञा मानने, और यीशु मसीह के लोहू के छिड़के जाने के लिए चुने गए हैं ...'' (1 पतरस 1:1, 2)।

चुने गए लोग मसीह की आज्ञा मानना चुनते हैं। जब कोई व्यक्ति मसीह की आज्ञा मानने को चुनता है तो वह चुने हुए लोगों में आ जाता है। हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि यदि परमेश्वर जानने का निर्णय करे तो उसमें जानने की योग्यता है कि कौन-कौन उद्धार पाएगा और कौन-कौन नाश होगा; परन्तु परमेश्वर के मनमाने ढंग से यह तय करने की अवधारणा कि कौन स्वर्ग में जाएगा और किसे नरक में फैंका जाएगा बाइबल की नहीं है। पवित्र शास्त्र मनुष्य की स्वतन्त्र इच्छा पर ज़ोर देता है। डी. एल. मुडी ने कहा है, ''जो कोई भी चाहता है वह चुना हुआ है और जो नहीं चाहता वह नहीं चुना हुआ।''[12]

परमेश्वर ने यह चुन लिया है कि वे सब लोग जो मसीह में हैं छुड़ाए जाएं और इस प्रकार परमेश्वर द्वारा यह चुना जाना **जगत की उत्पत्ति से पहले** हो गया था। ''उत्पत्ति'' के लिए शब्द *katabolē* ''फैंकना या लिटाना'' के अर्थ वाले शब्द *kata* (''नीचे'') और *ballō* (''फैंकना'')।[13] यह परमेश्वर के एक संसार को जिसका पहले कोई अस्तित्व नहीं था अस्तित्व में लाने की बात है। ''जगत'' के लिए शब्द *kosmos* है जो ''उपयुक्त और सुसंगत प्रबन्ध या रचना, व्यवस्था'' का संकेत देता है।[14] इसलिए जब पौलुस ने ''जगत की उत्पत्ति से पहले'' शब्दों का इस्तेमाल किया तो उसके कहने का अर्थ परमेश्वर के कार्य के द्वारा रचे गए व्यवस्थित संसार से पहले था। यह वाक्य यूनानी नये नियम में कम से कम दस बार मिलता है और जहां-जहां यह पाया जाता है, वहां से यह स्पष्ट हो जाता है कि ''जगत की उत्पत्ति से पहले'' का अर्थ ''संसार और मानवीय इतिहास के आरम्भ से पहले है।''

समय से पूर्व इस क्षेत्र में, पुत्र से पिता द्वारा प्रेम किया गया (यूहन्ना 17:24) और हमारे लिए अपना पवित्र लहू बहाने के लिए ठहराया गया था (1 पतरस 1:18-20; देखें KJV)। वह ''जगत की उत्पत्ति से पहले'' (देखें मत्ती 13:35; 25:34; लूका 11:50; इब्रानियों 4:3; 9:26; प्रकाशितवाक्य 17:8) वध किया हुआ मेमना था (प्रकाशितवाक्य 13:8)। मसीह में परमेश्वर की योजना संसार के होने से बहुत पहले उसके मन में थी।

यह योजना सनातन, अपरिवर्तिनीय और अव्यापक है। यहां पर पौलुस की बात उसके पाठकों को इस ज्ञान से सांत्वना और प्रोत्साहन देने के लिए कही गई होगी कि वे अनन्तकाल से परमेश्वर के मन में थे। पौलुस ने यह बात सृष्टिकर्त्ता का धन्यवाद और स्तुति करने के संदर्भ में कही, जो सब प्रकार की आत्मिक आशिषें देने वाला है।

आयत 4. परमेश्वर ने हमें आशीष दी है और हमें अपने लोग बना लिया है ताकि **हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों।** आयत 1 में पौलुस ने अपने पाठकों को ''पवित्र लोग'' *hagiois* (*hagios* से) कहा, पर यहां उसने संकेत दिया कि मसीही लोग ''पवित्र''

हैं जो कि यूनानी भाषा में वही शब्द है। पहला हवाला ''मसीह में'' होने वालों की परमेश्वर के सामने स्थिति का है और दूसरा ''उस नैतिक स्थिति का, जो ऐसी स्थिति से जुड़ा है'' संकेत देता है।[15] परमेश्वर ने कहा, ''पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूं'' (1 पतरस 1:16)। ''निर्दोष'' शब्द *amōmos* का अनुवाद है और इसका अर्थ ''बिना दोष के,'' या ''बिना कमी से मुक्त होना, दान या दोष रहित बलि के पशु की तरह'' (लैव्यव्यवस्था 22:21)।''[16]

एक अर्थ में मानवीय जीव वैसे पवित्र नहीं हो सकते जैसे परमेश्वर पवित्र या बिना दोष के, जिसमें कोई दाग नहीं है (1 यूहन्ना 1:8)। मसीह हमारा सिद्ध नमूना है और मसीही लोगों को उस नमूने की ओर चलना चाहिए (1 पतरस 2:21); परन्तु सब लोग मसीह जैसे बनकर उस लक्ष्य से चूक जाते हैं। बेशक मसीही लोगों की कमी किसी भी प्रकार से इस तथ्य को नकार नहीं देती कि हमें पवित्र और निर्दोष जीवन जीने की कोशिश करनी चाहिए। जब हम परमेश्वर की ज्योति में चलने की तलाश करते हैं तो यीशु का लहू हमें हर प्रकार के पाप से शुद्ध कर देता है (1 यूहन्ना 1:7-9)।

एक और महत्वपूर्ण अर्थ में, मसीही व्यक्ति पवित्र और दोष रहित *है* क्योंकि वह ''मसीह में'' है। परमेश्वर ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले ''उस में'' चुन लिया। ताकि ''हम उसके निकट पवित्र और निर्दोष हों।'' ''ताकि हम हों'' (*einai hēmas*) '' *देश्य* या *डिज़ाइन* का विचार'' व्यक्त करता है।[17] इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने हमें उस में इसलिए चुन लिया ताकि वह हमें पवित्र और निर्दोष देख सके, क्योंकि हम मसीह में हैं। अपने पाप में हम अपवित्र, अधर्मी और खोए हुए हैं। हमारे अन्दर ऐसा कुछ नहीं है, जिससे हम अपने आपको परमेश्वर के सामने सराहें। जो लोग पाप में जीवन बिताते हैं उनमें कोई धार्मिकता नहीं है (रोमियों 6:20)। धन्य वचनों में यीशु ने ''मन के दीन'' अर्थात जो अपनी आत्मिक दरिद्रता को पहचान लेते हैं, उन पर आशीष दी है (मत्ती 5:3)।

''मसीह में'' सब कुछ बदल जाता है। हम में अपने आप में कोई धार्मिकता नहीं है, इस कारण मसीह हमारी धार्मिकता है (1 कुरिन्थियों 1:30)। जब हमने सुसमाचार की आज्ञा मानी तो हम ''धर्म के दास'' बन गए (रोमियों 6:17, 18)। मसीह की दुल्हन कलीसिया को धार्मिकता का लिबास पहनाया गया है, क्योंकि उसके वस्त्र मसीह के लहू में धो दिए गए थे (प्रकाशितवाक्य 7:14; देखें 19:8)। मसीह में बपतिस्मा लेने पर हमने वस्त्र के रूप में ''मसीह को पहन लिया'' और इस कारण अब हमने उसकी धार्मिकता को पहन लिया है (गलातियों 3:27)। मसीह में प्रवेश करने पर अनुग्रहकारी परमेश्वर ने हम पर धार्मिकता, पवित्रता और निर्दोषता मढ़ दी।

''उसके निकट'' वाक्यांश यूनानी में *katenōpion autou* है जिसका अर्थ है ''अन्दर और नीचे देखना।''[18] जब हम परमेश्वर के निकट खड़े होते हैं तो वह हमें हमारी सब मानवीय त्रुटियों के द्वारा हमारी आत्माओं में देखता है और उस पवित्रता और निर्दोषता से संतुष्ट हो जाता है, जो ''मसीह में'' होने के कारण हमें मिली है।

''मसीह में'' होने की आशिषें और लाभ

''मसीह के बाहर''
इफिसियों 2:12, 13

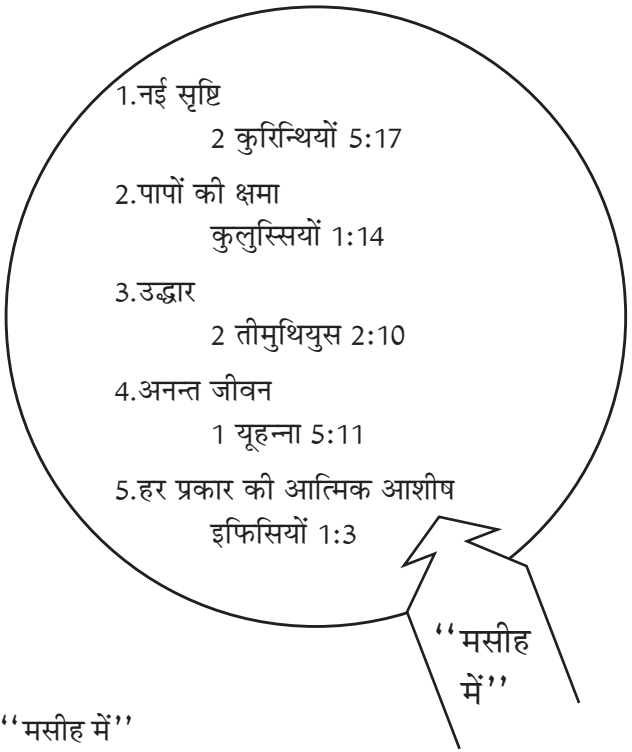

मैं ''मसीह में'' कैसे आता हूं ?

- गलातियों 3:27— ''मसीह में'' बपतिस्मा लिया
- रोमियों 6:3, 4— ''मसीह में बपतिस्मा लिया''

ओवन डी. ऑल्ब्रट, *टीचर'स गाइड फॉर सक्सेसफुल पर्सनल वर्क* (डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., 1993), 22. अनुमति लेकर छापा गया।

पहले से ठहराया गया (1:4-6)

[4]जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। [5]और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, [6]कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया।

आयत 4. विद्वान इस बात पर एकमत नहीं हैं कि ''प्रेम में'' को आयत 4 में ''उसके निकट'' के साथ जोड़ा जाए या आयत 5 में ''उसने हमें पहले से ठहराया'' के साथ। यदि यह पहले वाले भाग से जुड़ा है तो ''चुने जाने का कार्य और वह बात जो ध्यान में थी अर्थात हमारी पवित्रता और निर्दोषता, दोनों ही परमेश्वर के प्रेम के कारण थीं और इसमें उनकी व्याख्या थी।''[19] परन्तु यह भी सच है कि हमें पहले से ठहराने के परमेश्वर के कार्य की प्रेरणा ईश्वरीय प्रेम से मिली थी।

आर. सी. एच. लैंसकी ने इस विचार को माना कि ''प्रेम में'' आयत 4 का भाग है, क्योंकि इसका इस्तेमाल हमारे प्रेम के सम्बन्ध में किया गया है। ताकि ''पवित्र और निर्दोष'' उन पवित्र लोगों के स्वभाव के लिए है, जिन्हें प्रेम से प्रेरणा मिली है।[20] परन्तु ''पवित्र और निर्दोष'' का अधिक सम्बन्ध मसीह में हमारी स्थिति से और परमेश्वर के हमें मसीह में देखने के ढंग से है। इसमें ''प्रेम में'' मसीही लोगों के स्वभाव की नहीं, बल्कि पहले स्थान पर मसीह में होने की अनुमति देने वाले परमेश्वर के प्रेम की बात है। हमें आयत 4 में ''प्रेम में'' का अर्थ यह समझाने के लिए करना चाहिए कि परमेश्वर ने हमें अपनी संतान होने के लिए क्यों ठहराया।

आयत 5. ठहराया के लिए यूनानी शब्द *proorizō* है। संसार के आरम्भ से पहले परमेश्वर ने कुछ ऐसा ठहरा दिया, जो इतिहास में होना था। **उस** ने पहल करके **हमें** (पहले से ठहराया मसीह में पवित्र लोग और विश्वास) ताकि **हम उसके लेपालक पुत्र** हों। क्रिया शब्द *proorizō* पौलुस के लेखों में पांच बार मिलता है (रोमियों 8:29, 30; 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 1:5, 11) और ''इसका इस्तेमाल अनन्तकाल से ठहराने वाले के रूप में परमेश्वर के लिए ही हुआ है, ... या जैसा कि यहां है, किसी को किसी बात के लिए पहले से ठहराना।''[21] ''लेपालक पुत्र'' वह अधिकार है जिसे परमेश्वर ने हमारे लिए पहले से ठहरा दिया है। इस तथ्य को कि विश्वासी लोग परमेश्वर की संतान (या पुत्र) हैं चाहे पवित्र शास्त्र में आम तौर पर व्यक्त किया गया है, परन्तु लेपालकपन के विचार को केवल पौलुस ने इस्तेमाल किया। लेपालक के लिए यूनानी शब्द *huiothesia* नये नियम में पांच बार मिलता है, जिसमें एक बार परमेश्वर के साथ इस्राएल के विशेष सम्बन्ध के लिए (रोमियों 9:4); तीन बार विश्वासियों की वर्तमान स्थिति के हवाले से (रोमियों 8:15; गलातियों 4:5; इफिसियों 1:5); और एक बार मसीह के आगमन पर भविष्य के पुनरुत्थान के सम्बन्ध में, जब पुत्र होने का पूरा प्रदर्शन हो जाएगा (रोमियों 8:23)।[22]

गोद लेने के पुराने नियम के उदाहरण बहुत थोड़े हैं, जिनमें केवल तीन मामलों का उल्लेख है। ये तीनों मामले फलस्तीन के बाहर हुए–मूसा (निर्गमन 2:10), गनुभत (1 राजाओं 11:20) और एस्तेर (एस्तेर 2:7, 15)।[23] एस. डी. एफ़. सैलमोड का अवलोकन है, ''किसी बच्चे के किसी ऐसे परिवार ने कानूनी हस्तांतरण के अर्थ में जिसमें उसने जन्म न लिया हो गोद लेने का

यहूदी व्यवस्था में कोई स्थान नहीं था।''[24]

परन्तु यूनानी और रोमी लोगों में गोद लेने की बात प्रसिद्ध थी।

> रोमी कानून में ... एक कार्यवाही के लिए प्रावधान था जिसे *adoptio* कहा जाता था जिसमें किसी बच्चे को जो जन्म के द्वारा उसका पुत्र न हो लेने की बात हो, और *arrogatio* अर्थात किसी पुत्र का जो मुक्त हो, जैसा कि उसके सही पिता की मृत्यु हो जाने पर, लोगों के सार्वजनिक कार्य के द्वारा किसी दूसरे पिता को हंस्तातरण। इस प्रकार रोमी लोगों में कोई नागरिक किसी बच्चे को जो उसके परिवार में जन्म के द्वारा उसका न हो लेकर उससे अपना नाम दे सकता था, परन्तु ऐसा वह केवल गवाहों की पुष्टि के द्वारा एक औपचारिक कार्य के द्वारा ही कर सकता था, और इस प्रकार से गोद लिए हुए पुत्र को उन सभी अधिकारों और सभी दायित्वों को जो उसमें हों जन्म के द्वारा संतान के पूरे अधिकार मिलते थे।[25]

यूनानी भाषा के उपयोग और रोमी कानून के अनुसार गोद लिए जाने पर वह अपने पिता की सम्पत्ति बन जाता था, बहुत ज्यादा दास की तरह। उसे परिवार में जन्म लेने वाले पुत्र की तरह देखा जाता था और वह अपने पहले परिवार के लिए मर जाता था।[26] हम यह मान लेते हैं कि पौलुस अपने संसार के रीति-रिवाज़ों से परिचित था और पवित्र आत्मा की अगुआई से उसने परमेश्वर के साथ इफिसियों के सम्बन्ध की बात करने के लिए गोद लिए जाने की अवधारणा का इस्तेमाल किया।

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ने हमें इसलिए ठहराया कि ''हम उसके लेपालक पुत्र हों।'' उपसर्ग ''हों'' *eis* है और इसका अर्थ ''को ध्यान में रखकर'' है।[27] जो उस मंशा का संकेत देता है, जिसके लिए परमेश्वर ने हमें पहले से ठहराया। इस प्रकार से, ''पवित्र और मसीह यीशु में विश्वासी'' लोग ''चुने हुए'' और ''यीशु मसीह के द्वारा पुत्र'' होने के लिए ठहराए हुए बन गए। कैनथ एस. यूवेस्ट का अवलोकन है कि यूनानी संज्ञा *huiothesia* शब्द *tithēmi* (''रखना'') और *huios* (''एक व्यस्क पुत्र'') से किया गया है, सो परमेश्वर का इरादा व्यस्क पुत्रों को रखना था, उन्हें संतान की कानूनी स्थिति (प्रतिदिन की आवश्यकताओं को देखते हुए) और व्यस्क पुत्रों के कानूनी अधिकारों (मीरास देते हुए)।[28]

अन्य आयतें, जो अपनी संतान के लिए परमेश्वर की मंशा पर गोद लेने पर अतिरिक्त प्रकाश डालती हैं। (1) गलातियों 4:4-7 में पौलुस ने गोद लिए जाने को उनके सम्बन्ध में लिखा जो व्यवस्था के दास थे (इसे पूरा कर पाने की उनकी अयोग्यता के कारण)। उस संदर्भ में उसने गोद लिए जाने को दासता से छुड़ाए जाने को मिलाया। ''छुड़ा'' *exagorazō* है जिसका अर्थ है ''गुलामों की मण्डी में से खरीदना।''[29] यह आयत इस बात को समझा देती है कि गोद लिया जाना इस कारण सम्भव हुआ, क्योंकि मसीह की मृत्यु से उन्हें जो पाप में थे पाप के बंधन से छुड़ाने के लिए कीमत चुकाई गई (देखें यूहन्ना 8:34; रोमियों 6:17, 18; 1 पतरस 1:18, 19)। (2) रोमियों 8:15 सुझाव देता है कि परमेश्वर के लेपालक पुत्रों को दासता में से मानवीय स्वभाव में से मुक्त कर दिया गया है। जिन्हें मुक्त किया गया है वे परमेश्वर के वारिस हैं और मसीह के साथ संगी वारिस हैं। एक दिन इन संगी वारिसों को उसके साथ महिमा दी जाएगी।

(3) रोमियों 8:23 में लेपालकपन को उस आशा से जोड़ा गया है, जो मसीही व्यक्ति को मुर्दों में से जी उठने की है। पहले से ठहराए जाने जिसकी बात पौलुस ने की का सम्बन्ध परमेश्वर की संतान के रूप में हमारा आत्मिक आशिषों को प्राप्त करने से है। जिन्हें परमेश्वर के परिवार में गोद लिया गया है, उन्हें उसके पुत्र के स्वरूप में ढलने के उच्च लक्ष्य को पाने के लिए कहा जाता है (रोमियों 8:29)।

इसका अर्थ यह हुआ कि लेपालकपन या गोद लिए जाने का विचार हमें याद दिलाता है कि हम पाप के दास थे, परन्तु हमें मसीह के लहू द्वारा गुलामों की मण्डी में से खरीद लिया गया है। हम अपने पहले मालिक या माता-पिता के लिए मर गए (देखें रोमियों 6:1-4) और अब धार्मिकता के दास हैं (रोमियों 6:17, 18)। हमें ''परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं'' होने (रोमियों 8:17) का अधिकार और आशिषें मिली हैं जो परमेश्वर के इकलौते पुत्र यीशु से हैं।

जो लोग मसीह में हैं, उन्हें अपने व्यस्क संतान बनाने का परमेश्वर का कार्य **यीशु मसीह के द्वारा** प्रभारी हुआ। ''के द्वारा'' (*dia*) उपसर्ग ''मध्यस्थ करने वाले'' की बात करता है।[30] क्रूस पर मसीह का काम ही वह मध्यस्थ था, जिसके द्वारा पापियों को अपने परिवार में गोद लेने का परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हुआ था (देखें गलातियों 4:4-7)।

अपने लिए शब्द परमेश्वर के लिए हैं जिसमें उन्हें जो मसीह में हैं अपने बनाने के लिए पहले से ठहराया।

> उसने पहले से हमें अपने लिए व्यस्क पुत्रों के रूप में हमें ठहराने के उद्देश्य से, अपनी ही संतुष्टि के लिए चिह्नित कर लिया था, ताकि वह हमें अपने पुत्रों वाला प्रेम दे सकें, ताकि वह हमें पुत्र होने के उच्च अधिकार को और उसके साथ संगति को दे सके, ताकि वह हमारा उद्धार करने और हमारी आराधना और सेवा को ग्रहण करने में महिमा पा सके।[31]

''लिए'' *eis* शब्द से पता चल सकता है कि परमेश्वर स्वयं उस सब का लक्ष्य है जो उसने किया है।[32]

आयत 5. यह आयत कहती है, **अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार।** NASB के कुछ मुद्रणों में ''सुमति'' का अनुवाद ''शुभ इच्छा'' किया गया है (NKJV)। NEB में ''ऐसी उसकी इच्छा और चाह थी,'' जबकि NIV में ''उसकी इच्छा और चाह से मेल खाती'' है। LB में इस वाक्यांश को ''क्योंकि उसने चाहा'' किया गया है। अनुवादित संज्ञा ''मति'' (*eudokia*) सुसमाचार के विवरणों में तीन बार, सुसमाचार के विवरणों में तीन बार (मत्ती 11:26; लूका 2:14; 10:21) पौलुस के लेखों में छह बार (रोमियों 10:1; इफिसियों 1:5, 9; फिलिप्पियों 1:15; 2:13; 2 थिस्सलुनीकियों 1:11), मिलता है, परन्तु और कहीं नहीं मिलता।[33] मैरविन आर. विंसटन ने टिप्पणी की है कि यहां इस शब्द का इस्तेमाल ''*दयालुता* या *मित्रतापूर्वक* भावना के अर्थ में कठोर रूप में नहीं [जैसा कि लूका 2:14 और फिलिप्पियों 1:15] परन्तु *क्योंकि उसे अच्छा लगा* [देखें मत्ती 11:26 और लूका 10:21] के कारण है। परन्तु और अर्थ, *प्रेम में* सम्मिलित है और उसका संकेत दिया गया है, और इसके द्वारा व्यक्त किया गया है।''[34] (''के अनुसार'' पर और जानकारी के लिए 1:7, 9 पर टिप्पणियां देखें।)

आयत 6. कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो। यह वाक्यांश अपने स्तुतिगाान में पौलुस द्वारा कही गई बाद की बात से मेल खाता है (1:12, 14), परन्तु यहां ज़ोर परमेश्वर के अनुग्रह पर है। ''कि'' (*eis*) शब्द को जो कुछ परमेश्वर ने ''मसीह में'' मनुष्यजाति के लिए किया है, उसके *परिणाम* के परिचय के रूप में समझा जाना चाहिए। परमेश्वर के अनुग्रह में उसके स्वभाव के साथ-साथ उसका काम भी आता है। इसलिए उसका महिमायुक्त अनुग्रह, उसके व्यक्तित्व की शान, और उसकी योजना की चमक अपने लोगों से आराधना और स्तुति करने की पुकार करती है। परमेश्वर की सनातन मंशा परमेश्वर की स्तुति की पुकार करती है।

पौलुस ने परमेश्वर के अनुग्रह की अपनी चर्चा को **जिसे उस ने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया** शब्दों के साथ आगे बढ़ाया। उसने यह अनुग्रह हम पर ''सेंत मेंत दिया।'' कुछ अनवादों में ''जिसके द्वारा उसने हमें स्वीकार्य बनाया'' है (NKJV)। परमेश्वर अनुग्रह है। उसने अनुग्रह के कारण हमारा पीछा किया है, अपने अनुग्रह के कारण उसने हमें घेरा है और अपने अनुग्रह से उसने हमें आशीष दी है, अन्त तक ताकि हम सदा तक उसकी स्तुति कर सकें।

उस प्यारे में मसीह के लिए कहा गया है और यह विचार आयतों 3 से 5 में व्यक्त किया गया है। यीशु को परमेश्वर के ''प्रिय पुत्र'' के रूप में दिखाया गया है (मत्ती 3:17; 17:5; कुलुस्सियों 1:13)। एंड्रयू टी. लिंकोन ने यह अर्थ दिया कि यीशु ''प्रिय पुत्र *अति उत्तम*'' है।[35] मसीह में और मसीह के द्वारा परमेश्वर ने पापियों के लिए जो कुछ भी किया है वह केवल उसका पाप पर आंख मिचकाना नहीं था। परमेश्वर अनुग्रह, दया और प्रेम से तो भरा है, परन्तु वह पवित्रता और न्याय का भी परमेश्वर है। इसलिए पाप को दण्ड दिया जाना आवश्यक है, और क्रूस पर उसने यही किया। उन सब लोगों को जो ''मसीह में'' हैं, वह स्थान मिल गया है जहां पापियों पर उसकी दया के साथ परमेश्वर की पवित्रता और न्याय को संतुष्ट किया जा सकता है (देखें रोमियों 3:23-26)। उन पर जो मसीह में हैं ''दिया गया अनुग्रह यूनानी भाषा में कृदंत सांकेतिक में व्यक्त किया गया है,''[36] कालांतर में एक ही बार से पापियों के लिए पाप के लिए मसीह के सर्वपर्याप्त बलिदान में एक बार किया गया (इब्रानियों 10:12)।

छुड़ाए गए (1:7)

[7]हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा मिला है।

मसीही लोगों को परमेश्वर द्वारा पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुने जाने वाले कहने के बाद पौलुस बताने लगा कि ऐसी स्थिति कैसे सम्भव है। परमेश्वर के लेपालक पुत्रों को मसीह की बलिदानपूर्वक मृत्यु के द्वारा छुड़ाया गया है और इस कारण अनुग्रहपूर्वक पाप क्षमा किया गया है। 1:3-14 में बताई गई अगली दो आत्मिक आशिषें इस प्रकार हैं।

आयत 7. पौलुस ने भाइयों को मसीह में मिलने वाली तीसरी आयत का स्मरण दिलाया, **हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा मिला है।** ''छुटकारा'' शब्द की एक समृद्ध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है और परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध के विवरण के लिए सबसे सार्थक शब्दों में से एक है। अनिश्चित भूतकाल कालांतर में किसी समय हुए कार्य की बात करना पौलुस ने वर्तमान काल (वक्ता के बात कहने के समय हो रही घटना) का इस्तेमाल किया।[37] जिस

आशीष की उसने बात की वह कालांतर में हो चुकी थी, परन्तु उसके वर्तमान और भविष्य में लाभ मिलने थे। जो लोग मसीह में हैं, उन्हें अब इस वर्तमान के समय में छुटकारे के लाभ मिले हैं। सब प्रकार की आत्मिक आशिषें मसीह में हैं, जिस कारण ''उस में'' ही ''हम को छुटकारा मिला है।''

''छुटकारा'' पुराने नियम की अवधारणा है। पवित्र शास्त्र इस्राएल के मिस्र की दासता को छूटने को ''छुटकारा'' बताता है (उदाहरण के लिए देखें, निर्गमन 6:6; 15:13; व्यवस्थाविवरण 7:8; 15:15)। नये नियम के इस सिद्धांत को लेते हुए पौलुस के मन में पक्का पुराने नियम की पृष्ठभूमि ही होगी। ''छुटकारा'' शब्द जिसे *apolutrōsis* से लिया गया है, का अर्थ है ''दासतव'' की स्थिति से छूटना। आरम्भ में इसे ''किसी गुलाम या बंदी को वापस खरीदना अर्थात छुड़ौती का दाम चुकाकर 'स्वतन्त्र करना' '' का विचार पाया जाता था।[38] यूनानी धर्मशास्त्र में ''छुटकारा'' में एक उपपद का इस्तेमाल किया गया है जिसका मूल अर्थ ''the redemption'' अर्थात वह छुटकारा है जिसकी उम्मीद और चाह की जाती थी और मिल गया है। इस आयत को लिखते हुए पौलुस के मन में ''छुटकारा'' की बात करते हुए उसने ''उसके लहू के द्वारा'' को जोड़ते समय ''छुड़ाने'' और छुड़ौती दोनों शब्द होंगे।

मसीह का लहू पापी को छुड़ाने के लिए चुकाई गई कीमत है। इसलिए पौलुस ने कहा, ''क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो'' (1 कुरिन्थियों 6:20)। पतरस ने इसमें जोड़ा, ''तुम्हारा छुटकारा ... मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ'' (1 पतरस 1:18, 19)। छुटकारे के लिए मसीह के लहू की कीमत क्यों देनी पड़ी? लैव्यव्यवस्था 17:11 में एक गहरी बात मिलती है, जहां पुराने नियम के बलिदानों की व्याख्या की गई है। वहां पर मूसा ने कहा, ''क्योंकि शरीर का प्राण लहू में रहता है ... क्योंकि प्राण के कारण लहू ही से प्रायश्चित होता है।'' जिस प्रकार से बलिदान में भेंट किए गए प्राण और लहू से परमेश्वर का क्रोध प्राचीन इस्राएल के पापों के प्रति थोड़ी देर के लिए शांत होता था, वैसे ही पापियों के लिए मसीह के दान किए गए प्राण से पाप के लिए ठहराए गए प्राणों पर उसका क्रोध और न्याय पक्के तौर पर शांत हो गया। उसके लोहू के द्वारा में उपसर्ग *dia* है, जो दिखाता है कि मसीह का लहू वह माध्यम है जिसके द्वारा पाप की कीमत चुकाई गई। परमेश्वर की पवित्र व्यवस्था के अनुसार पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमियों 6:23); परन्तु मसीह ने अपने लहू के द्वारा हमारे छुटकारे का दाम चुका दिया।

क्षमा किए गए (1:7, 8)

[7]अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है। [8]जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया।

आयत 7. पौलुस के मन में दो कार्य थे, जब उसने ''उसके लहू के द्वारा छुटकारा'' और ''अपराधों की क्षमा'' (1:7) की बात लिखी। ''छुटकारा'' क्रूस पर हुआ था जब मसीह के लहू से हमारी छुड़ौती की कीमत चुकाई गई। ''क्षमा'' तब होती है जब पापी लोग पश्चात्तापी विश्वासियों के रूप में जो उसमें बपतिस्मा लेते हैं ''उस में'' प्रवेश करते हैं (प्रेरितों 2:38)।

क्षमा पवित्र शास्त्र में बताई गई चौथी आत्मिक आशीष है। यहां पर इस्तेमाल किया गया

यूनानी संज्ञा शब्द *aphesis* यूनानी क्रिया शब्द *aphiēmi* से लिए गए शब्द का परिणाम है, जिसका अर्थ है ''भगाना''[39] हमें बली के उस बकरे का स्मरण आता है जिसे मूसा की व्यवस्था के अधीन लोगों को इस्राएल के पाप लादकर ''जंगल में भेजना'' होता था (लैव्यव्यवस्था 16:21)। भेजने का विचार भजन संहिता में भी मिलता है। दाऊद ने लिखा, ''उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उस ने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है'' (भजनसंहिता 103:12)। मीका ने कहा, ''तू उनके सब पापों को गहिरे समुद्र में डाल देगा'' (मीका 7:19)। परमेश्वर के लिए बात करते हुए यशायाह ने यही तस्वीर दिखाई, ''मैं वही हूं जो अपने नाम के निमित्त तेरे अपराधों को मिटा देता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा'' (यशायाह 43:25)। यीशु ने छुटकारे और क्षमा के विचारों को मिला दिया। उसने कहा, ''मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:28); ''यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)।

अपराधों शब्द *paraptōma* से लिया गया है, जो पाप को ''नैतिक मापदण्डों का उल्लंघन,'' ''चूक,'' या ''एक ओर *गिरना*'' की ओर दिखाता है।[40] यह इस शब्द को नये नियम के अन्य शब्दों से, जिनमें पाप का वर्णन है जैसे *anomia* (''विधर्म'') *adikia* (''अधर्म'') से अलग करता है। ''पाप'' के लिए नये नियम का सबसे प्रसिद्ध शब्द *hamartia* है ''जो न केवल पाप के कार्यों के लिए'' बल्कि *शक्ति, आदत, स्थिति* के रूप में पाप पर लागू होता है।[41] जो व्यक्ति अपराधों में वास करता है, वह विधर्म के जीवन में रह रहा है और पाप की शक्ति के अधीन है। जब कोई व्यक्ति मसीह में प्रवेश करता है तो परमेश्वर का अनुग्रह उसके विधर्म को क्षमा कर देता और उसे धर्मी बना देता है। उसे पाप की शक्ति, दोष और परिणामों से मुक्त कर दिया जाता है। यानी परमेश्वर अनुग्रहपूर्ण उसे एक बदला हुआ जीवन जीने के लिए सही दिशा में लाता और उसे उसके योग्य बनाता है।

के अनुसार यूनानी उपसर्ग *kata* का अनुवाद है जिसमें नियन्त्रण की बात करते हुए ''अधिकार'' का विचार पाया जाता है।[42] परमेश्वर का छुटकारा और क्षमा को **धन** (*ploutos*) अर्थात **उसके अनुग्रह के** धन या बहुतायत से संचालित होते हैं[43] (देखें 1:6)।

> अनुग्रह के रूप में ईश्वरीय आज़ादी अर्थात ईश्वरीय भलाई की वह कृपा जिसे कमाया नहीं जा सकता, को ही पौलुस बहुत बार स्तुति और आश्चर्य के साथ बढ़ा कर दिखाता है। यहां पर दान के दिए जाने का इतने ज़बर्दस्त ढंग से होना अर्थात अनुग्रह को धनवान होने के गुण के साथ ही दिखाया गया है। परमेश्वर की ओर से हम पर मसीह में किया गया है, अनुग्रह के धन की ज़बर्दस्त धारणा विशेष रूप से पौलुसी है।[44]

मसीह के क्रूस को देखने से मसीही लोगों को परमेश्वर के अनुग्रह के धन के लिए धन्यवाद देना आरम्भ करने की अनुमति मिलती है। क्रूस के ऊपर ही परमेश्वर ने छुटकारे का मार्ग देने और अयोग्य मनुष्य जाति को क्षमा करने के लिए अपने ही पुत्र की मृत्यु होने दी। परमेश्वर के अनुग्रह का कोई अन्त नहीं है, इसके संसाधनों के खत्म होने का कोई डर नहीं है और मनुष्य की आवश्यकता पूरी न कर पाने का कोई खतरा नहीं है। रोमियों 5:20 में पौलुस ने इसे इस प्रकार

से कहा है: ''जहां पाप बहुत हुआ, वहां अनुग्रह भी कहीं अधिक हुआ।'' परमेश्वर का अनुग्रह असीम है (देखें 2:7)!

आयत 8. इस आयत में **जिसे** (*hos*) परमेश्वर के अनुग्रह को कहा गया है। पौलुस ने कहा कि यह अनुग्रह **हम पर बहुतायत से किया** गया ''बहुतायत से'' के लिए यूनानी क्रिया शब्द (*perisseuō*) का अर्थ है ''बहुत मात्रा में, भरपूर होना।'' सकर्मक के रूप में इस्तेमाल करने पर इस शब्द का अर्थ ''भरपूरी का कारण'' होता है।[45] पौलुस इस बात की पुष्टि कर रहा था कि परमेश्वर का अनुग्रह हमारी अवश्यकताओं की पूर्ति से कहीं अधिक है।

समझाया गया (1:8-10)

[8]जिसे उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। [9]कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया, जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। [10]कि समयों के पूरा होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

पौलुस द्वारा बताई गई पांचवीं आत्मिक आशीष उस अनुग्रह का बहुत होना है जो हम पर बहुतायत से किया गया (1:8)। ''सारे ज्ञान और समझ सहित'' उस ने सारे ज्ञान और समझ सहित हम पर बहुतायत से किया। कि उस ने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया (1:8, 9)। परमेश्वर ने हमें अपने दिल की बात बता दी है!

आयतें 8, 9. सारे ज्ञान और समझ सहित उस ने बताया से मेल खाता है। व्याख्याकार इस बात पर सहमत नहीं हैं कि यह ज्ञान और समझ परमेश्वर के गुणों को कहा गया है या ये वे दान हैं, जिन्हें परमेश्वर लोगों को देता है। परन्तु कुलुस्सियों के लिए पौलुस की प्रार्थना जो इफिसियों के इस भाग से बहुत मेल खाती है, संकेत देती है कि परमेश्वर ने उन्हें ज्ञान और उसकी इच्छा से भरपूर होने पर ज्ञान और समझ देनी थी (कुलुस्सियों 1:9)। अन्य शब्दों में परमेश्वर हमें अपनी इच्छा इसे समझने और इसे लागू करने की योग्यता के साथ-साथ देता है।

''ज्ञान'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द (*sophia*) का इस्तेमाल पौलुस और नये नियम के अन्य लेखकों द्वारा बार-बार किया गया। ''समझ'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द (*phronēsis*) नये नियम में केवल एक और बार मिलता है (लूका 1:17 में जिसमें धर्मी व्यक्ति के ''व्यवहार'' की बात की गई है)। पलेटो, अरस्तु, फिलो और सिसेरो बाइबल से बाहर के विशिष्ट स्रोत हैं जिन्होंने इन दो शब्दों में अन्तर किया, जिसमें ''ज्ञान'' बड़ा विचार है, अधिक सामान्य अर्थ में, और ''समझ'' ज्ञान के शेष परिणाम या प्रासंगिकता को दिखाते हुए, कौन विचार है।[46] नये नियम के उपयोगों में भी ऐसा ही लगता है। ज्ञान परमेश्वर की बातों की बौद्धिक समझ है, और ''समझ'' हमारे प्रतिदिन के जीवनों के लिए इन बातों की अधिक प्राथमिकता है। असली धार्मिक ज्ञान और समझ परमेश्वर के बहुतायत के अनुग्रह के दानों में मिलते हैं। ''ज्ञान'' और ''समझ'' जिनकी बात पौलुस ने की वे ''अपनी इच्छा का भेद'' जिसे परमेश्वर ने बताना चुना है, समझने और लागू करने की परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमता को कहा गया है।

आयत 9. भेद इफिसियों में छह बार मिलने वाले *mustērion* का अनुवाद है। इसमें

उस पर जिसे दिया गया हो ईश्वरीय सच्चाई के प्रकट किए जाने का बोध है, न कि आधुनिक अर्थ जिसकी न तो आह मिल सकती है और न समझ।[47] जैसा कि यहां इस्तेमाल हुआ है यह सुसमाचार के लिए है (देखें 6:19) जो कि मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा लोगों को आग से बचाने के लिए परमेश्वर की मंशा है। 1 कुरिन्थियों 2:7-13 में पौलुस ने परमेश्वर के भेद प्रकट किए जाने के बारे में कुछ विस्तार से बताया। उसने कहा कि उसने परमेश्वर के ज्ञान या योजना को भेद की रीति में बताया, जिसे समय से पूर्व गुप्त रखा गया था परन्तु मनुष्य की महिमा के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था (आयत 7)। परमेश्वर की योजना का किसी मनुष्य को कुछ पता नहीं था। किसी ने विचार भी नहीं किया या कल्पना भी नहीं की थी जब तक परमेश्वर ने इसे प्रकट नहीं किया (आयतें 8-10)। परमेश्वर के अपने ही सही समय पर, उसने इस योजना पर उन पर जिन्हें उसने इसे ग्रहण करने के लिए चुना था "आत्मा के द्वारा" प्रकट किया (आयत 10)। पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि प्रकाशन को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर द्वारा चुने हुए लोगों में से वह एक था और अपने लिए प्रेरणा का दावा किया जब उसने कहा, "जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की बातों में नहीं, परन्तु आत्मिक बातों की सिखाई हुई बातों में ... सुनाते हैं" (आयत 13)।

युगों तक परमेश्वर की योजना एक भेद था। यानी जब तक उसने इसे प्रकाशन के द्वारा बताया नहीं तब तक यह छुपा हुआ या गुप्त था। जो कुछ अब प्रकट किया गया है उसमें उद्धार की पूरी ईश्वरीय योजना (देखें रोमियों 16:25; 1 कुरिन्थियों 2:7; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 1:26; 1 तीमुथियुस 3:9, 16) के साथ कुछ विशेष बातें हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर ने इस तथ्य को प्रकट किया है कि यहूदियों के साथ-साथ अन्यजाति लोग भी उद्धार के लिए पात्र हैं (रोमियों 11:25; इफिसियों 3:3, 6)। उसने हमें मसीह के द्वितीय आगमन के समय मृतकों के पुनरुत्थान और जीवितों के परिवर्तन की बात बताई (1 कुरिन्थियों 15:51, 52)। इसके अलावा उसने मसीह और कलीसिया के बीच का सम्बन्ध भी समझाया (इफिसियों 5:32)। पौलुस ने **अपनी** (परमेश्वर की) **इच्छा का** भेद बताया। "इच्छा" शब्द *thelēma* से लिया गया है ("भावनाओं पर आधारित इच्छा")[48] और यह दिखाता है कि परमेश्वर की इच्छा उसके प्रेम भरे दिल से दिखती है।

आयत 9. के अनुसार यूनानी उपसर्ग *kata* का अनुवाद है जिसका इस्तेमाल इफिसियों के इस भाग में पांच बार हुआ है (1:5, 7, 9, 11 [दो बार]) और इसका अर्थ "किसी बात से नीचे" हो सकता है।[49] पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर की इच्छा का यह बताया जाना **उस** की **सुमति** (*eudokia* से) से था।[50] जो कुछ परमेश्वर ने सुसमाचार में बताया है वह पवित्र लोगों के लिए बेहतर से बेहतर करने की उसकी भली मंशा से निकाला था (देखें 1:5)। ऐसी भली मंशा ही परमेश्वर ने अपने ही इरादे से जो उसके प्रेमपूर्वक मन से निकली थी **ठान** रखी थी (*protithēmi,* "अपने सामने रखना" यानी "ठानना।"[51]) **अपने आप में** मसीह के लिए कहा लगता है और मसीह में मिलने वाली आशिषों को इस भाग में काफ़ी कुछ कहा गया है। परन्तु इस आयत में हम *en autōi* का अनुवाद "अपने आप में" करके बेहतर करेंगे (NKJV)। क्योंकि विचाराधीन परमेश्वर की इच्छा है और अगली आयत तक मसीह का विशेष रूप से उल्लेख नहीं है (देखें 2 तीमुथियुस 1:9)।

आयत 10. ऐसा उस डिज़ाइन की घोषणा करने के बाद जो परमेश्वर की मंशा ने दिशा ली **प्रबन्ध** *oikonomia, oikos* (''घर'') और *nomos* (''व्यवस्था'') से बना एक मिश्रित शब्द है जिसका अर्थ है ''घर का प्रबन्ध, या घरेलू मामले, प्रबन्धन, निगरानी, किसी दूसरे की सम्पत्ति का प्रबन्ध, प्रबन्धक, निगरान, भण्डारी का कार्यालय।''[52] लिंकोन का अवलोकन है कि *oikonomia* का अर्थ प्रबन्ध करने का कार्य अर्थात जिसका प्रबन्ध किया जाता है या प्रबन्धक की भूमिका हो सकता है; परन्तु यूनानी संसार में इसका ''इस्तेमाल निरन्तर रूप में परमेश्वर के संसार की व्यवस्था और प्रबन्ध करने के लिए किया जाता'' था।[53]

यहां पर इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ही प्रबन्धक है यानी प्रबन्ध करने वाला वही है और जिसका प्रबन्ध किया जाता है वह उसकी योजना है, जो कि प्रकट हो चुका भेद है। NASB में यूनानी धर्मशास्त्र **का** के लिए के उपयुक्त शब्द का इस्तेमाल करता है चाहे लिखने में कुछ संस्करणों में ''का'' ही है। ''का'' सही समझ देता है क्योंकि यह स्वाभाविक रूप में ''समयों के पूरा होने'' की ओर ले जाता है जिसका प्रबन्ध परमेश्वर द्वारा किया जा रहा है। मसीह अब प्रकट किए जा चुके भेद में पूरी तरह शामिल हैं, इस बात में कि वह परमेश्वर की योजना का केन्द्र और इसे लागू करने वाला दोनों हैं। कुलुस्सियों 1:27 में पौलुस ने इस भेद को ''मसीह तुम में'' के रूप में प्रकट किया है।

समयों के पूरा होने का अनुवाद *plērōma* (''पूरा होना'') और *kairos* (''समय की अवधि'') से किया गया है।[54] इस वाक्यांश का अर्थ परमेश्वर के भेद के प्रकाशन अर्थात मसीही युग में पाए जाने वाले समय है। गलातियों 4:4 में पौलुस ने कहा, ''जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा।'' पौलुस ने समय के उस बिन्दु की ओर संकेत करते हुए जब कि कुछ होता है, ''समय'' के लिए *chronos* का इस्तेमाल किया।[55] इस आयत में ''पूरा होने'' का अर्थ इतिहास के एक विशेष समय है, जिसमें एक लम्बी अवधि पूरी हुई है।

> ''समय का पूरा होना'' उस समय को कहा गया है जब मसीहा प्रकट हुआ था, जिसे परमेश्वर द्वारा ठहराया गया था, जिसका पूर्वजों को वचन दिया गया था, भविष्यवक्ताओं द्वारा उसकी भविष्यवाणी की गई थी, यहूदियों द्वारा उसकी प्रतीक्षा की गई और सब विश्वासी लोगों द्वारा दिल से उसकी राह देखी गई।[56]

''समयों'' इस बात पर ज़ोर देने के लिए कि संसार के सही काल अर्थात पुरखाओं के समयों और मूसा की व्यवस्था और इस्राएल के समयों के सभी काल मसीही युग की ओर संकेत करते हैं। इस युग में परमेश्वर ने अपनी संतान के लिए विशेष दान और आशिषें दी हैं।

> परन्तु यह दान और सौभाग्य पूर्ण रूप में तब तक नहीं दिए जा सकते थे जब तक इन्हें पाने वाले अव्यस्क [गलातियों 4:1-3] और उनके लिए तैयार नहीं थे। प्रतीक्षा का एक काल निकलना आवश्यक था और प्रशिक्षण की प्रक्रिया के पूरा होने और प्रौढ़ता का समय आने पर ही पूर्ण रूप में यह दान दिए जा सकते थे। परमेश्वर के पास अपने अनुग्रह के गुप्त उद्देश्य के रूप में यह समय अनुकूल था। जब वह समय आया तो उसने मसीह के देहधारी होने में अपने रहस्य को प्रकट कर दिया और वस्तुओं की एक नई स्थिति बताई

जिससे मनुष्यों के साथ उसके पूर्वव्यवहारों और अपने अनुग्रह की पूर्ण मंशा के प्रकाशन में इतनी देर लगाने का कारण बताया गया।[57]

इस ''पूरा होने'' से मसीह के देहधारी होने से लेकर उसके द्वितीय आगमन तक उसका पूरा युग अस्तित्व में आया। इसमें वह सब आ जाता है जो परमेश्वर ने इस वर्तमान युग में पूरा करने के लिए ठहराया है।

आयत 10. यह आयत परमेश्वर के प्रबन्ध के स्वभाव की सब बातें स्पष्ट कर देती है। पौलुस के द्वारा मसीह में अपनी मंशा की घोषणा करते हुए परमेश्वर ने अपने मन की बात खोल दी। **कि** कुछ संस्करणों में इटैलिक यानी तिरछा किया गया मिलता है, जो इस बात का संकेत देता है कि इन शब्दों को और स्पष्ट अर्थ देने के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया। अनुवादकों ने ऐसा करके बहुत अच्छा किया क्योंकि ''समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध सब कुछ मसीह में एकत्र करना ही है।''

एकत्र करे बहुत कम इस्तेमाल हुए यूनानी क्रिया शब्द *anakephalaioō* का अनुवाद है जो केवल यहां और रोमियों 13:9 में मिलता है। इसकी परिभाषा ''जोड़ना,'' ''सारांश देना,'' ''मसीह में सब कुछ इकट्ठा करना'' है।[58] रोमियों की आयत में पौलुस ने मानवीय सम्बन्धों से जुड़ी सभी आज्ञाओं का ''सारांश'' बता दिया। उसने कहा कि वे ''सब का सारांश इस बात में पाया जाता है, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।' '' **सब** आज्ञाओं का सारांश प्रेम है; और इसी भाषा में, परमेश्वर की योजना का सारांश **मसीह** है।

यूनानी में मध्य सुर, जैसा कि यहां इस्तेमाल हुआ है, का अर्थ है ''फिर से इकट्ठे एकत्र होना,''[59] जो उसके मिलने का संकेत है, जो किसी समय एक था परन्तु फिर अलग हो गया। किसी समय एक, क्या था, जो अलग हो गया और अन्त में इस मसीही युग में परमेश्वर के भेद के प्रकाशन के अनुसार मिल गया? यहां पर संदर्भ उस बात पर ज़ोर देता है जो परमेश्वर ने मसीह में पवित्र लोगों और विश्वासियों के लिए पूरी की है। जो मसीह में हैं उन्हें चुना जाना, गोद लिया जाना, छुड़ाया जाना और क्षमा किया जाना आवश्यक था और जो मसीह में हैं, उन्हें परमेश्वर के भेद का प्रकाशन मिला है, इस कारण इसका अर्थ यह है कि मसीही लोग किसी समय पाप के कारण परमेश्वर से अलग थे (देखें यशायाह 59:1, 2) परन्तु अब मिल गए हैं। कुलुस्सियों 1:20-22 में पौलुस ने यह स्पष्ट किया, जब उसने कहा कि परमेश्वर ने मसीह के क्रूस के लहू के द्वारा सब बातों को अपने साथ मिलाया चाहे वे स्वर्ग की हों या पृथ्वी की। उसने आगे कहा कि कुलुस्से के लोग पहले बुरे कामों में लगे होने के कारण परमेश्वर से अलग थे, परन्तु अब उसके साथ मिल गए थे। क्रूस पर मसीह के लहू के द्वारा परमेश्वर ने किस बात को पूरा किया? उसने अपने साथ मिलाने के लिए पापी लोगों के लिए रास्ता खोल दिया। इसलिए सब कुछ जो **स्वर्ग में है** और **जो कुछ पृथ्वी पर है**। वैश्विक मेल अर्थात छुटकारे के मसीह के काम की पूर्णता को व्यक्त करने का प्रतीकात्मक ढंग है। आखिर मसीह ने अपना लहू स्वर्गदूतों या सृजित संसार के लिए नहीं, बल्कि पापी मनुष्य जाति के लिए बहाया।

यूनानी धर्मशास्त्र में आयत 10 में ''मसीह'' से पहले एक उपपद मिलता है। सैलमण्ड ने अवलोकन किया है कि उपपद का मिलाया जाना इसे एक अधिकार बना देता है जैसा कि आयत

12 में है।[60] हेनरी एल्फर्ड ने कहा कि जब ''मसीह'' शब्द के साथ उपपद जोड़ा जाता है तो कोई विशेष बात कही जा रही होती है।[61] इस आयत में कही जा रही विशेष बात यह है कि मसीही युग में परमेश्वर का सारा उद्देश्य पापी व्यक्ति को ''मसीह में'' अपने साथ को मिलाना है। ईश्वरीय उद्देश्य का चरम स्वर्ग और पृथ्वी के ''अलग-अलग तत्वों को इकट्ठे करना''[62] अर्थात परमेश्वर से मनुष्य को मिलाना है।

1:8-10 में पौलुस ने घोषणा की कि वह भेद जिसे परमेश्वर ने अब प्रकट किया है वह मसीही युग ही है। इस युग के दौरान मसीह पापी लोगों को परमेश्वर से मिलाने के काम में लगा हुआ है; वह पृथ्वी को स्वर्ग से तब मिला रहा होता है, जब लोग मसीह में पवित्र लोग और विश्वासी बनते हैं। यही तो परमेश्वर की मंशा है, जो बीते युगों में एक भेद था, परन्तु अब खुल चुका है।

एक मीरास दी गई (1:10-12)

[10]...उसी में

[11]जिस में हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहिले से ठहराए जाकर मीरास बने। [12]कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों।

उनके द्वारा जो मसीह में हैं आत्मिक आशिषें पाए जाने की अपनी सूची को आगे बढ़ाते हुए पौलुस ने मसीह में मसीही की मीरास की बातें कीं।

आयतें 10, 11. पौलुस ने कहा था कि हमें मसीह में परमेश्वर की मंशा के अनुसार उसके साथ मिलाया गया है। उसने आगे कहा कि जिन्हें मसीह में परमेश्वर के साथ मिलाया गया है वे मीरास बनें। यह छठी आत्मिक आशीष है। NASB में आयत 11 में ''मीरास'' के साथ वाक्य में KJV के विपरीत जहां आयत 10 में वाक्य के भाग में दिया गया है ''उसने'' (आयत 10 के अन्त में मिलता है) रखा है। इस भाग के साथ चलते हुए पौलुस ने ध्यान दिलाया कि मसीही व्यक्ति को एक विशेष विरासत मिली है। **उसी में** (''जिसमें'') इस अतिरिक्त आशीष को बताता है।

यूनानी क्रिया शब्द *eklērōthēmen* के अनुवाद **मीरास बनें** वाक्यांश पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है। यह शब्द *klēroō* से लिया गया है, जिसका अर्थ है ''चिट्ठियां डालना, चिट्ठी से तय करना,''[63] और ''*दिया गया* भाग।''[64] लिंकोन ने ध्यान दिलाया कि यहां क्रिया शब्द कर्म वाच्य में है, जिसमें कर्त्ता पर काम किया जाना है और उसमें ''चिट्ठी के द्वारा नियुक्त किए जाने'' की शक्ति है।[65] सम्बन्धित संज्ञा शब्द *klēros* का इस्तेमाल कुलुस्सियों 1:12 में हुआ है, जहां परमेश्वर को योग्य विश्वासियों को ''ज्योति में पवित्र लोगों की मीरास में अभी होने'' को कहते दिखाया गया है। सप्तति अनुवाद (LXX) में,[66] *klēros* का इस्तेमाल गिनती 26:55, 56 में इस्राएल के गोत्रों में प्रतिज्ञा किए हुए देश के विभाजन के संदर्भ में किया गया है। LXX में व्यवस्थाविवरण 9:29 और 32:8, 9 में भी इस्राएल को परमेश्वर का ''भाग'' बताया गया है। सम्बन्धित संज्ञा शब्द के ऐसे उपयोगों के कारण कुछ व्याख्याकार सुझाव देते हैं कि इफिसियों 1:11 में क्रिया शब्द का अनुवाद ''हमें परमेश्वर के भाग के रूप में चुना गया है'' होना चाहिए।

कुलुस्सियों 1:12 कहता है कि परमेश्वर ने एक विशेष भाग के लिए विश्वासियों को योग्य बनाया और इफिसियों की इस आयत में कहा गया है कि परमेश्वर ने एक भाग नियुक्त किया या दिया है। परमेश्वर की संतान होने कारण हम परमेश्वर के वारिस हैं और हमें मीरास मिली है, परन्तु इस आयत का एक बेतहर विचार यह है कि हम अपने आप में परमेश्वर की मीरास हैं। इस बात को विशेष रूप से प्राथमिकता दी जाती है, जब हम आयत 12 में आते हैं जहां हम देखते हैं कि परमेश्वर की ठहराई हुई मीरास के रूप में हम ''उसकी महिमा की स्तुति'' होने के लिए अस्तित्व में हैं।

आयत 11. अपने लोगों के लिए परमेश्वर की मंशा उसके प्रेम (1:4), उसकी ''भली मंशा'' (1:5, 9), और उसके अनुग्रह (1:6-8)। के कारण होती है। जो लोग *मसीह में* हैं वे परमेश्वर की पहले से ठहराई हुई पसंद के द्वारा उसकी मीरास हैं (देखें 1:4, 5)।

तीन शब्दों की और समीक्षा की आवश्यकता है। पहला शब्द **मनसा** (*prothesis*) शब्द *योजना, उद्देश्य, इच्छा* करना है।[67] यह परमेश्वर के जान-बूझकर बनाए डिज़ाइन का सुझाव देता है।[68] विश्वासी व्यक्ति मसीह में जो कुछ बना वह अपने आप या संयोग से नहीं हुआ बल्कि परमेश्वर के ''अनन्त डिज़ाइन'' से था।

दूसरा शब्द **इच्छा** है, जो यूनानी संज्ञा शब्द *thelēma* का अनुवाद है। नये नियम में यह शब्द लगभग साठ बार मिलता है।[69] कुछ अपवादों के साथ इसका अनुवाद ''इच्छा'' हुआ है और आम तौर पर इसका अर्थ परमेश्वर की इच्छा होता है। जहां *boulē* का अर्थ कुछ करने का निर्णय लेना है, वहीं *thelēma* उस इच्छा का संकेत देता है जो हमें कार्य करने को कहती है।[70] परमेश्वर की मंशा में परमेश्वर के यह विचार करने और जो वह *boulē* करना चाहता था उस पर तर्क देते हुए ईश्वरीय बुद्धि शामिल थी। परमेश्वर के प्रेम से प्रेरित होने पर ईश्वरीय भावना भी शामिल थी। अन्त में ईश्वरीय इच्छा शामिल थी, क्योंकि परमेश्वर ने मसीह में अपनी योजना को अंजाम दिया (*thelēma*)। रोमियों 8:28 में जब पौलुस ने कहा कि परमेश्वर ''सब बातें'' मिलाता है, तो वह छुटकारे और संसार में पाई जाने वाली सब घटनाओं पर परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने की बात कर रहा था। कलीसिया में और संसार में सब कुछ उसकी मंशा को पूरा करते हुए ही होता है जिसमें वह मनुष्य की भलाई और अपनी स्तुति के लिए योजनाओं पर काम करता है (देखें दानिय्येल 4:32)।

तीसरा शब्द *boulē* से लिया गया **मत** है, जो ''सलाह और विचार; सभा का इकट्ठा होना'' का संकेत देता है।[71] परमेश्वर ने मसीह में अपनी मंशा में मनमानी से काम नहीं किया। उसने ''सभा की बैठक'' बुलाई। कलीसिया के आरम्भ के दिन पतरस के संदेश में (प्रेरितों 2:23) प्रेरित ने यह कहते हुए कि यीशु को ''पहले से ठहराई हुई योजना के अनुसार'' (''ठहराई हुई मंशा''; NKJV; ''ठहराई हुई मत''; ASV)। क्रूस पर दिए जाने के लिए सौंपा गया था (परमेश्वर की ''पहले से ठहराई हुई मंशा'') कहते हुए इसी शब्द का इस्तेमाल किया। संसार या मनुष्य के होने से पहले हम स्वर्ग के दृश्य की केवल कल्पना कर सकते हैं, जिसमें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा यह तय करने के लिए कि पाप में गिरे मनुष्यों के जीवनों में पाप का सामना करने के लिए क्या किया जाए पवित्र सभा में इकट्ठा हुए। यह तय किया गया कि खोई हुई मनुष्य जाति को छुड़ाने के लिए परमेश्वरत्व या ईश्वरीयता का एक सदस्य संसार में इस प्रकार से जन्म

लेने के लिए जाए, जैसे पहले कभी किसी का जन्म नहीं हुआ, ऐसे रहने के लिए जैसे कभी कोई नहीं रहा और अन्त में इस प्रकार मरने के लिए आए जैसे कभी कोई नहीं मरा था। परमेश्वर की योजना पर विचार हुआ, चिन्तन हुआ और इस पर मंथन किया गया; और यह ठहराया गया कि पुत्र उद्धारकर्त्ता बनने के लिए इस संसार में आए। वह पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए खुशी से आ गया, परन्तु इस योजना पर पूरी तरह से पहले से विचार कर लेने के बाद। ''मत'' परमेश्वर की मीरास के रूप में खोए हुओं को मसीह में लाने का निर्णय या योजना है।

आयत 12. परमेश्वर ने **मसीह में** जो कुछ हमारे लिए किया है वह उसने हमें **आशा** देने के लिए किया है और उसने हमें अन्त तक आशा इसलिए दी है ताकि हम **उसकी महिमा की स्तुति** के लिए बने रहें। पौलुस ने ''उसके अनुग्रह की महिमा'' की स्तुति की (1:6)। हम आशा के साथ-साथ छुटकारे, क्षमा और समझ के कारण परमेश्वर की स्तुति करते हैं (1:7-10)। हमें आशा मिली है, क्योंकि हम परमेश्वर की मीरास हैं।

''आशा'' के लिए *proelpizō* शब्द है जिसकी परिभाषा बुएस्ट ने ''पहले से आशा करना, घटना के इसकी पुष्टि करने से पहले किसी व्यक्ति या वस्तु में आशा'' के रूप में की है।[72] ''आशा रखना'' के लिए सामान्य यूनानी क्रिया *elpizō* से जुड़े पूरे सर्ग *pro* का बल यही है। हमें किसी व्यक्ति में अपने विश्वास के कारण ''मसीह में'' आशा है। हमें ''उस में'' आशा है क्योंकि हमने सुसमाचार की बात मानी है। ''मसीह में'' बपतिस्मा लिए जाने के समय (रोमियों 6:3) हमने ''मसीह में'' जहां हर आत्मिक आशीष मिलती है जीना आरम्भ कर दिया। परन्तु इस आयत में ज़ोर मसीह में हमारी आशा के होने पर है।

आयत 12 के सम्बन्ध में एक और अवलोकन किया जाना चाहिए। यह दिखाते हुए कि वह ''मसीह ही'' या ''मसीहा ही'' की बात कर रहा था, पौलुस ने ''मसीह'' से पहले यूनानी उपपद का इस्तेमाल किया (जैसा कि NASB के कुछ मुद्रणों में टिप्पणी में संकेत दिया गया है)।

''आशा'' के लिए शब्द का अर्थ ''पहले से आशा रखना'' है जिस कारण कुछ व्याख्याकर्ताओं ने इस आयत का अर्थ यहूदी मसीही लोगों के लिए किया है जो मसीहा के आने की राह देखते थे और उसके आने से पहले आशा में बने हुए थे। पौलुस के लिखने के समय यह यहूदी मसीह में थे। इसलिए इस विचार के अनुसार वे उन अन्यजाति विश्वासियों से अलग थे, जिन्होंने ''मसीहा'' के आने की राह नहीं देखी थी। सैलमण्ड, वूएस्ट और विनसेंट जैसे व्याख्याकारों[73] ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने ''मसीह में आशा रखने'' में **हम जिन्होंने पहले आशा रखी थी** का इस्तेमाल करने में अपने आपको अन्य यहूदी विश्वासियों के साथ मिलाया और फिर आयत 13 ''तुम'' *humeis* के इस्तेमाल में अन्यजाति मसीही लोगों की बात की।

क्या ''मसीह'' से पहले यूनानी उपपद का इस्तेमाल और बहुवचन व्यक्तिवाचक सर्वनाम ''हम'' का इस्तेमाल इस निष्कर्ष को सही ठहराता है? शायद नहीं। पहले तो यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि पौलुस ने इस अध्याय की पहली चौदह आयतों में सभी मसीहियों की बात करने के लिए ''हम'' और ''हमें'' शब्दों का इस्तेमाल किया। दूसरा, इस्राएल की मसीहा से जुड़ी आशा सांसारिक थी (इस बात में कि लोग एक राजनैतिक मसीहा की राह देख रहे थे), इस कारण यह आशा शायद ही ''उसकी महिमा की स्तुति'' बननी थी। तीसरा, पवित्र शास्त्र के इस पूरे भाग का विषय उन आशिषों को तय करना था जो मसीह में हैं, इस कारण यह नहीं हो सकता कि पौलुस

ने अचानक पूर्व-मसीही दिनों की ओर अपने परिदृश्य को बदल दिया हो। चौथा, ''मसीह'' से पहले उपपद का इस्तेमाल पवित्र शास्त्र में आम है। इस योजना का इस्तेमाल अकेले इफिसियों में कम से कम सतरह बार हुआ है और इसे यहां पर विशेष महत्व के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। पांचवां, इस आयत में मसीह में आशा मसीही की मीरास के पूरा होने की बात करती है, जिस पर पौलुस ने अगली आयतों में बताया है। इसलिए लैंसकी, लिंकोन[74] और अन्य लोगों के साथ हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ''जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी'' का अर्थ हर मसीही के लिए है जो पूरी मीरास पाने से पहले मसीह की प्रतिज्ञाओं में भरोसा जताता है, जो कि वर्तमान युग के अन्त में मसीह के प्रकट होने पर होगा।

मसीह में छाप (1:13, 14)

[13]और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी। [14]वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।

आयतें 13, 14. इन आयतों के परिचय के रूप में आइए यहां और आयतें 10 से 12 में ''हम'' और ''उसी में'' के इस्तेमाल पर ध्यान देते हैं। यहां इस्तेमाल की गई शब्दावली उस स्थति को मज़बूत करती है कि पौलुस इफिसुस के सब मसीही लोगों की बात कर रहा था। आयत 12 के ''हम'' का अर्थ यदि यहूदी मसीह है और आयत 13 के ''तुम'' का अर्थ अन्यजाति विश्वासी है तो क्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि यहूदी मसीहियों पर छाप नहीं लगी है? हम इस निष्कर्ष को शायद ही मान पाएं, क्योंकि छाप लगना मसीह में सब विश्वासियों को मिलने वाली आत्मिक आशीष है। बल्कि पौलुस ने ''हम'' के इस्तेमाल को जिसमें वह स्वयं भी है निकालकर अपने पाठकों को उसके प्रचार के द्वारा सुसमाचार का संदेश सुनने वालों के रूप में सम्बोधित किया। पौलुस जब इफिसुस में पहुंचा, तो उसने पहले ही सुना था, विश्वास किया था और छाप किया गया था। इफिसुस में प्रचार करने के बाद वहां के विश्वासी ने भाइयों ने भी सुना, विश्वास किया और उन पर मोहर की गई। प्रेरित ''हम'' से ''तुम'' तक बदले समय प्रेरित के मन में यही तथ्य होगा।

आयत 14 में उसने इफिसुस के लोगों के जीवनों में और उसके अपने जीवन में सुसमाचार के परिणामों की बात की और ''हमारी'' का इस्तेमाल अपने पाठकों और अपने द्वारा परस्पर स्थिति में लौटने के लिए किया।

''उसी में'' मूल में ''जिसमें'' है *en hōi* का अनुवाद न कि *en autōi* का, और NASB की कुछ प्रतियों में इसे एक टिप्पणी में बताया गया है। ''उसी में'' छाप लगने का क्या अर्थ है। इस अन्तिम आशीष को देखने से पहले एक अन्तिम प्रश्न पर विचार करते हैं। आयत 13 में ''उसी में'' का अनुपयुक्त दूसरा इस्तेमाल क्यों है? एक सम्भावित व्याख्या है कि पौलुस ने जो पवित्र आत्मा के द्वारा छाप लगने की अशीष पर चर्चा करने को था, कुछ विचार डाल दिए जिनसे उसके पाठकों को छाप के पहले की दो बातें याद आनी थी। पहली यह कि *उन्होंने सुसमाचार*

को सुना था, और दूसरी यह कि *उन्होंने इस पर विश्वास किया था*। एक अर्थ में पौलुस ने कहा, ''सुसमाचार को सुनने और इस पर विश्वास करने के कारण तुम पर छाप लगी है।'' आयत का अर्थ है ''सत्य के संदेश अर्थात अपने उद्धार के सुसमाचार को सुनने के बाद और उस पर विश्वास लाने के बाद तुम पर उस में छाप लग गई।'' NASB की कुछ प्रतियों में एक टिप्पणी में ''उसी में'' के साथ ''विश्वास किया'' जोड़ा गया है। जिससे पड़ने में ''उसमें विश्वास किया'' बन जाता है। ''विश्वास किया'' मसीह के उस संदेश से जोड़ देना बेहतर है जिसे इफिसियों ने सुना था। उन्होंने सुसमाचार को सुना था और इस पर विश्वास किया था और सुनने और विश्वास करने से छाप का रास्ता खुल गया।

आयत 13 में पवित्र आत्मा को **पवित्र आत्मा की छाप** कहा गया है जो प्रेरितों 2:38, 39 वाली प्रतिज्ञा की बात है। वहां पर पतरस ने कहा था:

> पतरस ने उन से कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; *तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा*।

ये आयतें दिखाती हैं कि मन फिराने और बपतिस्मा लेने वाले विश्वासी को दो प्रतिज्ञाएं मिलती हैं जिसमें एक तो पापों की क्षमा की है और दूसरी पवित्र आत्मा के दान की। इससे मिलती आयत में पतरस ने कहा कि परमेश्वर उन्हें पवित्र आत्मा देता है ''जो उसकी आज्ञा मानते हैं'' (प्रेरितों 5:32)। पौलुस ने इस दान के बारे में और समझाया, जब उसने कुरिन्थुस के मसीही लोगों से कहा, ''तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है; और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है'' (1 कुरिन्थियों 6:19)। ये आयतें हमें बताती है कि पवित्र आत्मा का दान स्वयं आत्मा ही है जो मसीही व्यक्ति की देह में वास करता है। यह पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं है जो प्रेरितों को मिला था (देखें प्रेरितों 1:4-8) और जिसके साथ आश्चर्यकर्म करने के दान होते थे; बल्कि यह सब विश्वासियों के लिए दान है जो सुसमाचार की आज्ञा मानने वालों को मिलता है जैसा प्रेरित 2 में लोगों को मिला था।

इस ''पवित्र आत्मा का दान'' का आज मसीही लोगों के लिए क्या अर्थ है? इसका उत्तर रोमियों 8:26, 27 और गलातियों 5:22, 23 के साथ-साथ इफिसियों 3:16 और वर्तमान वचन पाठ 1:13, 14 जैसी आयतों में मिलता है। परन्तु यह सोचने में हमें सावधानी बरतनी चाहिए कि परमेश्वर की बातों की व्याख्या आसानी से हर किसी की सन्तुष्टि के लिए की जा सकती है। पौलुस ने हमें याद दिलाया है, ''आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!'' (रोमियों 11:33)।

हमें इस बात पर भी ध्यान देना चाहिए कि पौलुस ने **विश्वास किया** शब्द का अर्थ व्यापक अर्थ में किया, जिसमें आज्ञा मानना शामिल है। इस आयत में उसने कहा, जिन्होंने विश्वास किया उन्हें ''पवित्र आत्मा की छाप'' से **उसी में छाप लगी,** परन्तु सुसमाचार की आज्ञा मानने के बिना आत्मा का कोई दान और कोई छाप नहीं होनी थी (देखें प्रेरितों 2:37-40)।

आयत 13 में **वचन** के लिए *logos* का अनुवाद आम तौर पर ''संदेश'' किया जाता है।

शब्द संवाद के पहिये होते हैं, जिनके द्वारा हम अपने विचार व्यक्त करते हैं। यूहन्ना ने मसीह को ''वचन'' कहा (यूहन्ना 1:1, 14) क्योंकि परमेश्वर ने अपने ईश्वरीय स्वभाव को (यूहन्ना 1:18) और अपनी ईश्वरीय इच्छा को (इब्रानियों 1:1, 2) मसीह के द्वारा बताया। **सत्य का** वचन उस तथ्य की बात है कि इफिसुस के लोगों को सुनाया गया वचन ''सत्य'' था। ''सत्य'' के लिए यूनानी शब्द *alētheia* है जिसका अर्थ ''ईश्वरीय वास्तविकता''[75] अर्थात जो ''सत्य का, वास्तविकता में, असल में, निश्चित रूप से'' है।[76] सुनाया गया या लिखा गया वचन उन बातों के विषय में वास्तविकता और निश्चितता को दिखाता है जो परमेश्वर, मसीह, उद्धार और मनुष्य के साथ जुड़ी है। यीशु ने कहा, ''तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17) और इस सत्य के वचन को मनुष्य की ओर से विश्वास में लाने के लिए तैयार किया गया था (रोमियों 10:17)। ''सत्य का वचन'' **तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार** या ''शुभसमाचार'' है।[77] नये नियम में सुसमाचार का सम्बन्ध पाप से उद्धार से है। इसलिए सत्य का वचन और सुसमाचार का सत्य उद्धार की ओर ले जाता है। सुसमाचार जो कि सत्य है परमेश्वर के वचन के रूप में ग्रहण किया जाना (1 थिस्सलुनीकियों 2:13), विश्वास किया जाना (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:12), प्रेम किया जाना (2 थिस्सलुनीकियों 2:10) और आज्ञा माना जाना आवश्यक है (1 पतरस 1:22)। यह वचन हर किसी के लिए जो इसे ग्रहण करता है ''उद्धार के नीमित परमेश्वर की सामर्थ'' है (रोमियों 1:16)।

इफिसियों के सुसमाचार को सुनने और इस पर विश्वास लाने के बाद उन्हें ''पवित्र आत्मा की छाप लगी'' थी, इस आशीष का क्या महत्व है? ''छाप लगी'' क्रिया शब्द *sphragizō* से लिया गया है और यह भूतकाल कर्मवाच्य में है जिसका अर्थ है कि यह कुछ ऐसा है जिसे परमेश्वर हमारे सब के लिए एक ही बार करता है।[78] कुछ अपोस्टलिक फादर्स (''प्राचीन कलीसिया के उन लेखकों का सामान्य पदनाम जो प्रेरितों के विद्वान थे या उन्हें ऐसा माना जाता था।'') का कहना था कि बपतिस्मा छाप है।[79] इस समूह में सिकंद्रिया के क्लेमेंट (लगभग 150–215 ईस्वी) और थरमस का चरवाहा (ईस्वी 110–140 के लेखों में) शामिल हैं जिन्हें लगा होगा कि परमेश्वर ने विश्वासियों को बपतिस्मे के समय छाप के रूप में पवित्र आत्मा का दान देना है।[80] यदि उनका मानना था कि बपतिस्मा वास्तव में छाप था तो उनका निर्णय संदेहपूर्ण था, क्योंकि पौलुस ने कहा कि इफिसियों के बपतिस्मा लेने के साथ विश्वास करने पर उन पर छाप लगी थी। छाप लगने को पापों की क्षमा या पवित्र आत्मा के दान से बढ़कर किसी भी प्रकार से बपतिस्मे से नहीं मिलाया जाना चाहिए। ये अवधारणाएं आपस में जुड़ी हुई हैं परन्तु एक जैसी नहीं। वचन में यहां ''विश्वास किया'' एक बात है, जबकि ''प्रतिज्ञा किया हुआ पवित्र आत्मा'' दूसरी और ''छाप'' इससे भी अलग बात है।

मसीही व्यक्ति को मन फिराव की शर्त पर पापों की क्षमा और दान के रूप में पवित्र आत्मा के मिलने पर पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा से छाप की जाती है। ये दान एक बयाना है। बयाना छाप नहीं है, बल्कि पवित्र आत्मा है जो **मीरास का बयाना** के रूप में दिया गया है (1:14)। 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 में पौलुस द्वारा यही तथ्य बताया गया है, जहां पौलुस ने कहा, ''और जो हमें तुम्हारे साथ मसीह के दृढ़ करता है, और जिस ने हमें अभिषेक किया वही परमेश्वर है। जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया।'' उसने आगे

कहा, ''और जिस ने हमें इसी बात के लिए तैयार किया है वह परमेश्वर है, जिस ने हमें बयाने में आत्मा भी दिया है'' (2 कुरिन्थियों 5:5)। ''बयाना'' *arrabōn* का अनुवाद है जिसका अर्थ ''पेशगी ... जो कीमत का एक भाग होती है और सौदा पक्का करने के लिए पहले दी जाती [है]''[81] के रूप में दिया जाता है। पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर ने वर्तमान में हमें स्वर्ग में मिलने वाली महिमा के रूप में **हमारे** भावी सनातन **मीरास** के लिए सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान में मसीही लोगों को दिए गए पवित्र आत्मा हैं (देखें 4:30; रोमियों 8:23)।

आयत 14 में पौलुस ने पवित्र आत्मा के द्वारा जो पूर्ण छुटकारे का हमारा बयाना है, पवित्र लोगों पर छाप लगाने के दो कारण बताए। पहले तो मसीही लोगों से **उसके मोल लिए**। इस वाक्यांश का अर्थ है ''सम्पत्ति के छुटकारे'' के लिए उसके के स्थान पर ''परमेश्वर के अपने'' तिरछा किया हुआ मिलता है, जो संकेत देता है कि इन शब्दों को सही अर्थ देने में सहायता के लिए अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया। यहां पर अनुवादक सही है, क्योंकि विचार परमेश्वर की सम्पत्ति पर किया जा रहा है। अनुवादित संज्ञा शब्द ''छुटकारा'' यूनानी संज्ञा शब्द (*apolutrōsis*) नये नियम में परमेश्वर के कार्य के सम्बन्ध में आठ और बार मिलता है।

परमेश्वर ''सम्पत्ति'' को छुड़ाने वाला और छुड़ाता भी है।[82] पुराने नियम में (देखें निर्गमन 19:5; व्यवस्थाविवरण 14:2) और नये नियम (1 पतरस 2:9; देखें प्रेरितों 20:28) में परमेश्वर के लोगों को आम तौर पर उसकी सम्पत्ति बताया जाता है। आयत 14 और इफिसियों 4:30 में पौलुस के मन में भविष्य की आशीष की बात थी। इसलिए परमेश्वर की ओर से छुटकारे का अर्थ उसके ''उन लोगों को, जो पहले से उसके बन गए हैं पूरी तरह से'' लेना है।[83]

पवित्र आत्मा के द्वारा पवित्र लोगों को छाप करने का दूसरा कारण है **कि उसकी महिमा की स्तुति हो**। यह उद्देश्य आयत 6 और 12 में बताए उद्देश्य जैसा ही है। परमेश्वर की योजना का अन्तिम रूप में पूरा होना, जिसकी घोषणा यहां हुई थी, सब मसीही लोगों की ओर से स्तुति करने का कारण होना चाहिए।

और अध्ययन के लिए: ''छाप लगने का संदर्भ'' (1:13)

बाइबल में छाप लगने की अवधारणा का इस्तेमाल कैसे किया गया है: (1) राजा की मोहर से पता चलता था कि कोई चीज़ असली है (एस्तेर 3:12; 1 राजाओं 21:8)। *जब मसीही लोगों पर छाप की जाती है तो यह इस तथ्य को दिखाता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं।* उन्हें केवल परमेश्वर की संतान नहीं कहा जाता, बल्कि सचमुच में परमेश्वर की संतान हैं। यूहन्ना ने कहा, ''हे प्रियो, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं'' (1 यूहन्ना 3:2)।

छाप का अर्थ सुरक्षा होता था। जब दानिय्येल को शेरों की मांद में रखा गया तो उस मांद को पत्थर के साथ और राजा की अपनी अंगूठी से आधिकारिक रूप में मोहर लगा दी गई (दानिय्येल 6:17)। इसी प्रकार से यीशु की कब्र को छेड़छाड़ से बचाने के लिए उस पर छाप की गई थी (मत्ती 27:62-66)। *मसीही लोगों पर सुरक्षा के लिए छाप की जाती है।* पतरस ने कहा कि परमेश्वर की संतान ''की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए

जो आने वाले समय में प्रकट होने वाली है, की जताी है'' (1 पतरस 1:5)। सुरक्षित रहने के लिए मसीही लोगों को विश्वास रखकर और आदर के अनुसार मसीह की सुनकर और मानकर परमेश्वर के साथ सहयोग करना आवश्यक है (देखें यूहन्ना 10:28, 29)।

(3) छाप से स्वामित्व का पता चलता था। 2 तीमुथियुस 2:18, 19 में पौलुस ने विश्वासी मसीही लोगों की अर्थात उनकी, जिन्होंने सच्चाई को पकड़ा हुआ था, पक्की नींव कहा जो विश्वास से फिरकर गिरेगी नहीं। उसने कहा कि उन पर यह मोहर लगी है: ''प्रभु अपनों को पहचानता है।'' ''परमेश्वर की नींव के पक्के होने का वर्णन उस छाप से लगाया जाता है जो परमेश्वर ने इस पर रखी है।''[84] इस रूपक का पौलुस का इस्तेमाल ''स्वामित्व को दिखाने के लिए इमारत की नींव पर लगाई जाने वाली मोहर के आधार पर है। ...''[85] परमेश्वर का स्वामित्व प्रकाशितवाक्य 7:3-8 में पवित्र लोगों के मोहर किए जाने पर भी ज़ोर होना आवश्यक है। मसीही लोग वास्तव में परमेश्वर के हैं।

(4) छाप से काम के पूरा होने का पता चलता है। यिर्मयाह 32:9-14 में नबी ने एक खेत खरीदा। इसकी कीमत चुकाने के बाद उसने कागजों पर हस्ताक्षर करके मोहर लगा दी, जिसमें बिक्री की शर्तें इत्यादि थीं। रजिस्ट्री पर हस्ताक्षर करने और मोहर लगने से सौदा पूरा हो गया। इसी प्रकार से, *मसीही लोगों को यह संदेश देने के लिए कि पाप से हमारा छुटकारा मसीह के क्रूस और सुसमाचार के आज्ञापालन के द्वारा पूरा हो गया है, छाप लगाई जाती है*।

(5) छाप एक चिह्न हो सकता है। रोमियों 4:11 में पौलुस ने कहा कि अब्राहम ने ''खतने का चिह्न पाया कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए जो उसने बिना खतने की दशा में रखा था।'' खतने का चिह्न अब्राहम की धार्मिकता की छाप था। कुछ टीकाकारों का विचार है कि बपतिस्मा धार्मिकता का चिह्न और छाप है। ये व्याख्याकार कुलुस्सियों 2:11-13 का हवाला देते हैं। जहां पौलुस ने खतने और बपतिस्मे के बीच सम्बन्ध दिखाया। छाप के इस पहलू को इतनी दूर नहीं धकेला जाना चाहिए, क्योंकि अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बाद खतने का चिह्न पाया था, जबकि बपतिस्मा हमारी क्षमा और परमेश्वर के साथ सही खड़ा होने से पहले आता है (देखें प्रेरितों 2:38)। इसके अलावा पवित्र आत्मा की छाप मसीही लोगों के लिए किया जाने वाला कुछ काम है, जबकि बपतिस्मा हमारे द्वारा किया जाने वाला काम है। परन्तु मसीही लोगों की छाप असली, सुरक्षित, परमेश्वर के और पूरी तरह से छुड़ाए होने का चिह्न है।

प्रासंगिकता

''मैं आशीषित हूं!'' (1:3)

मेरा एक मित्र है जो ''कैसे हो?'' अभिवादन का उत्तर हर बार ''मैं आशीषित हूं!'' के तीन शब्दों से देता है। वह सही है। वह आशीषित है, और हम सब भी आशीषित हैं।

परमेश्वर सब लोगों को सांसारिक आशिषों की बहुतायत से आशीष देता है (देखें मत्ती 5:45; याकूब 1:17)। परन्तु अपनी संतान के लिए परमेश्वर के पास अतिरिक्त आशिषें हैं। वह ''हमें मसीह में ... सब प्रकार की आत्मिक आशीष'' से आशीष देता है (1:3)। इन आशिषों की दो बातें ध्यान दी जानी आवश्यक हैं कि वे परमेश्वर की ओर से मिलती हैं और वे केवल

उन्हीं के लिए हैं जो ''मसीह में'' हैं।

''मसीह में'' (1:3-14)

आयतें 3 से 14 में दस बार पौलुस ने ''मसीह में'' (1:3, 10, 12), ''उस प्रिय में'' (1:6), या ''उसी में'' (1:4, 7, 9, 10, 13 [दो बार])।[86] इन सभी आत्मिक आशिषों का आनन्द लेने के लिए व्यक्ति को वहां होना आवश्यक है जहां यह आशिषें पाई जाती हैं यानी ''मसीह में'' (1:3)। कोई मसीह में कैसे आता है *?*

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (रोमियों 6:3, 4)।
>
> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करबे के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26, 27)।

सबसे बड़ी आशिषें ''मसीह में'' आत्मिक आशिषें हैं। ये आशिषें मसीही लोगों को आत्मिक, बहुतायत और अनन्त जीवन से आशीष देती हैं।

जे लॉकहर्ट

मसीही व्यक्ति का भूत, वर्तमान और भविष्य (1:3-14)

1:3-14 का अध्ययन स्वाभाविक रूप में तीन भागों में हो जाता है:

- आयतें 3-6: पौलुस ने परमेश्वर के इस देह के बनाने के पिछले पहलू पर चर्चा की जिसमें हमें सब प्रकार की आत्मिक आशिषें मिलती हैं।
- आयतें 7-12: उसने परमेश्वर के मसीह की देह से व्यवहार करने के वर्तमान पहलू की बात की।
- आयतें 13, 14: उसने इस रहस्यपूर्ण देह के भावी पहलू अर्थात जो कुछ कलीसिया के लिए भविष्य में है उसकी बात की।

हमें चुना गया है! (1:4-6)

परमेश्वर ने हमें अपने लोग, अपनी संतान, अपनी देह और अपनी कलीसिया बनाने के लिए चुना है। एक शब्द में यह चुना जाना ''चुनना'' है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:4; KJV)। इफिसियों 1:4-6 में पौलुस ने बाइबल की इस बड़ी शिक्षा की चार विशेषताएं समझाई थी।

ढंग। ''जैसा उसने हमें ... *चुन लिया* ...'' (1:4)। परमेश्वर ने इस देह को कैसे बनाया? इसके अंग कैसे जोड़े गए? यह अचानक नहीं हुआ। हमें परमेश्वर की इच्छा के सर्वशक्तिमान कार्य के कारण देह अर्थात कलीसिया के अंग बनने का सौभाग्य मिला है।

हमें मसीह की देह के अंग होने के लिए इसलिए नहीं चुना गया है कि हम बहुत अच्छे हैं या हमारे काम बहुत अच्छे हैं। हमें हर रविवार आराधना सभाओं में भाग लेने या सप्ताह के हर पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेने के कारण नहीं जोड़ा गया। यह काम महत्वपूर्ण तो है, परन्तु सच्चाई यह है कि हम देह में केवल इसलिए हैं क्योंकि अनन्तकाल में पीछे परमेश्वर ने चाहा कि हम इसमें हों। यदि परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने में हमें इस देह के अंग होने के लिए न चुना होता तो इस संसार की सब धार्मिक रीतियां हमें इसके अंग नहीं बना सकती।

पहले से ठहराए जाने की शिक्षा ने सदियों से लोगों को उलझाया हुआ है। अंगस्टिन से लेकर वैसली[87] जैसे महान धर्मशास्त्रियों ने सदियों से इस समस्या को सुलझाने की कोशिश की है। नया नियम की शिक्षा यह कैसे हो सकती है कि अपने सर्वशक्तिमान होने में परमेश्वर हमें चुनता है, परन्तु साथ ही यह कहते हुए कि ''जो भी आए'' ज़िम्मेदारी मनुष्य पर डाल दे?

क्या प्रेमी परमेश्वर कुछ लोगों को तो भलाई के लिए और कुछ को बुराई के लिए चुन सकता है? इस प्राचीन दुविधा का उत्तर हमारे वचन पाठ में है। उसे देखने से पहले हमें ध्यान देना चाहिए कि हर मसीही उस देह का अंग है और केवल एक और कारण के लिए स्वर्ग की ओर जा रहा है कि परमेश्वर ने चुना है।

परमेश्वर का हमारा चुनना अपनी कीमत की ज़बर्दस्त समझ देने वाला होना चाहिए। हम मसीही होने के कारण क्यों शरमाएं? हमें संसार के राजा की ओर से सम्मान दिया गया है। उसने हमें चुना है!

उद्देश्य। ''... उसने *हमें* चुन लिया'' (1:4)। क्या पौलुस के कहने का अर्थ यह था कि किसी अन्य मण्डली में आराधना करने वाले लोगों के विपरीत परमेश्वर ने *हमें* चुन लिया है? नहीं, परमेश्वर ने हमें बचाने और दूसरों को नष्ट करने के लिए नहीं चुना। तो फिर पौलुस के यह कहने का अर्थ क्या था कि परमेश्वर ने हमें चुना है?

इब्रानियों 2:16 हमें परमेश्वर के अर्थ की बात को समझने में हमारी सहायता करता है: ''क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं बरन अब्राहम के वंश को सम्भालता है।'' पाप में गिरने वाले स्वर्गदूतों को छुड़ाने की परमेश्वर की कोई योजना नहीं। उन्हें छुड़ाए हुओं की इस देह का भाग बनाने के लिए चुना नहीं गया है। परमेश्वर ने इस तेजस्वी देह को बनाने के लिए मनुष्यजाति को ही चुना है। उसने हमें चुना है।

ध्यान से वचन को देखें। यहां चुने जाने की शिक्षा की पुरानी दुविधा की कुंजी मिलती है: ''जैसा उसने हमें ... *उसमें* चुन लिया'' (1:4)।

अपनी सर्वशक्तिमान इच्छा में परमेश्वर ने उन्हें जो मसीह यीशु में हैं अनन्त जीवन के लिए पहले से ठहरा दिया। यह निर्णय बदलने वाला नहीं है। यह उतना ही पक्का है जितना परमेश्वर। और किसी का उद्धार नहीं हो सकता। अनन्त जीवन उन्हीं के लिए जो प्रभु यीशु में हैं।

यीशु में कौन हो सकता है? कौन किस एक देह का भाग हो सकता है जो महिमा की ओर जा रही है? जो भी हो, सुसमाचार का उत्तर आज्ञापालन के द्वारा दिया! जो भी आए! कोई भी व्यक्ति जो चाहता है, वह परमेश्वर का चुना हुआ उद्देश्य बन सकता है।

अवसर। ''जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया ...'' (1:4)। परमेश्वर ने कब निर्णय लिया कि जो मसीह में हैं, उन्हें अनन्त जीवन और सब प्रकार की

आत्मिक आशिषें मिलें? संसार को बनाने से पहले, परमेश्वर ने अपनी पूरी योजना बना ली। अदन की वाटिका में हुए मनुष्य के विद्रोह से वह चकित नहीं हुआ। उसने हमें हमारी ही मूर्खता से बचाने की योजना पहले से बना रखी थी। प्रकाशितवाक्य 13:8 उन नामों का संकेत देता है जो ''उस मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे ... गए, जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है'' (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 1:9)।

क्या आप मान सकते हैं कि परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करता है? आपके जन्म लेने से भी पहले जब संसार की अभी योजना ही बनी थी, परमेश्वर को मालूम था कि आप पाप करोगे और उसका दिल तोड़ोगे। उसने आपसे प्रेम किया और फिर भी आपको चुन लिया।

डिज़ाइन। ''जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों'' (1:4)। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? इस सब में उसका क्या डिज़ाइन था? परमेश्वर हमारी संगति चाहता था। वह मनुष्य के साथ एक बार फिर से वैसे ही बातें करना और चलना चाहता था, जैसे आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में से निकालने के समय करता था। परन्तु हम बिना दो आवश्यक गुणों अर्थात पवित्रता और निर्दोषपन के परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं पहुंच सकते थे।

यदि हमारे पास कोई चीज़ नहीं है तो वह पवित्रता और निर्दोषपन का ईश्वरीय स्वभाव है। सबने पाप किया है। हर व्यक्ति संगति के परमेश्वर के मापदण्ड से गिर गया है। अपने संसाधनों के द्वारा हम कभी दोबारा परमेश्वर के चेहरे को नहीं देख सकते थे, तौभी कलवरी पर यीशु का काम हमें परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के योग्य बनाता है। हम पढ़ते हैं:

> ... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो (5:25-27)।

इरादा। ... ''उसने हमें ... प्रेम में ... ठहराया'' (1:4, 5)। परमेश्वर को इतनी सारी परेशानी में पड़ने के लिए किस बात ने प्रेरा? हमारी भलाई में, हमारी लोजता ने, हमारे जबर्दस्त व्यक्तित्वों ने? उसने ऐसा केवल इसलिए किया, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16)।

क्या आपके जीवन में कोई गुप्त पाप है? क्या आपके जीवन से प्रेम की कमी और परमेश्वर की परवाह की झलक मिलती है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। परमेश्वर तब भी आपसे प्रेम करता है। उसी प्रेरणा ने स्वर्ग और पृथ्वी को आपके लिए सच्ची संगति में उसके पास लौटना सम्भव बनाने के लिए उसे प्रेरणा दी है।

परमेश्वर के प्रेम के कारण हमारा सनातन भविष्य सुरक्षित है। कोई खामी नहीं। जो यीशु में हैं, उनमें से किसी को भी अचानक नज़रअन्दाज़ नहीं किया गया है। यदि आप यीशु में हैं, तो आपके लिए परमेश्वर की छुटकारे की योजना पक्की है। परमेश्वर के बड़े प्रेम ने उसे भरोसे से उसकी ओर लौटने वाले सब लोगों के लिए मार्ग निकालने के लिए प्रेरा है।

परिणाम। ''उस में हमें ... प्रेम में ... पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके

लेपालक पुत्र हों'' (1:4, 5)। हमें इस आयत के संदेश पर विचार करना चाहिए। हम गुलाम, दास, मित्र, पड़ोसी या सहयोगी नहीं हैं। हम पुत्र हैं! लूका 15 अध्याय वाला उड़ाऊ पुत्र घर लौट आया तो अपने पिता के साथ पूर्ण संगति में ग्रहण कर लिए जाने पर बहुत चकित हुआ। उसी प्रकार से हमें परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा सारे अधिकारों के साथ परमेश्वर के परिवार में लौटने दिया जाता है।

पुत्र होने के कारण हमें बताया जाता है कि जो कुछ परमेश्वर का है वह सब कुछ हमारा है (देखें लूका 15:22)। हमें परिवार में गोद ले लिया जाता है और इसके साथ जुड़ी सब आशिषें दी जाती हैं।

लक्ष्य। ''प्रेम में ... अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो ...'' (1:4-6)। परमेश्वर ने जो कुछ किया वह सब उसने क्यों किया? उसके हमें चुनने और पवित्र और निर्दोष कहने के उसके लक्ष्य को समझने की आवश्यकता है।

परमेश्वर पापियों का उद्धार इसलिए नहीं करना चाहता, क्योंकि वह उन पर तरस खाता है या मुख्य रूप में इसलिए कि वह उन्हें अनन्तकाल के नरक से बचाना चाहता है। दूसरे सब कारणों से बढ़कर परमेश्वर ने मनुष्य जाति के इतिहास में पुरुषों और स्त्रियों को बचाने के लिए काम किया है, ताकि उसे अनन्त महिमा मिल सके। साथ में गिरी हुई मनुष्य जाति जो छुटकारे के योग्य न थी, उन्हें वह प्रेरणा परमेश्वर की असीम बुद्धि को दिखाता है और स्वर्ग की सब सेनाओं के उसके अद्वितीय नाम को महिमा देने का कारण है।

सारांश। हमें पवित्रता और निर्दोषता में बहाल करना ताकि हम एक बार फिर से उसकी संगति को जान सकें, चाहे हम उसके योग्य नहीं हैं, परमेश्वर के हृदय को आनन्दित करता है। यह उसे आनन्द देता है। इसी कारण यह बड़े दुख की बात है कि जब हम पवित्रता की बुलाहट को हल्के से लेते हैं तो हम उस आनन्द को कम करते हैं जो परमेश्वर उन लोगों के द्वारा जिन्हें उसके अनुग्रह के द्वारा चुना गया है लेने को तड़पता है। आइए हम उन लोगों की तरह रहें जिन्हें इस्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर से अपनी संतान होने के लिए चुना गया है।

क्रिस बुलर्ड

आत्मिक आशिषें गिनाई गईं (1:4-14)

1:4-14 पौलुस ने सात आत्मिक आशिषें बताईं। ''सात'' पूर्णता या सिद्धता का अंक है इस कारण हम इन सात आशिषों को मसीह में मिलने वाली सभी आशिषों का सार के रूप में देख सकते हैं। (1) हमें मसीह में चुना गया (1:4)। परमेश्वर ने हमें अनन्तकाल से पवित्र और निर्दोष होने से चुना। (2) हमें मसीह में पहले से ठहराया गया था (1:5, 6)। परमेश्वर ने अपने प्रेम और अनुग्रह के कारण जो उसने हम पर ''उस प्रिय'' में किया हमें लेपालक होने के लिए पहले से ठहराया। परमेश्वर ने ऐसा अपनी ही महिमा की स्तुति के लिए किया। (3) हमें मसीह में उसके लहू के द्वारा छुड़ाया गया (1:7)। (4) हमें अपने अपराधों की क्षमा दी गई क्योंकि उसने हम पर अपना अनुग्रह किया (1:7, 8)। (5) परमेश्वर ने हम पर अपने भेद को जो स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाने के लिए था, प्रकट करने पर मसीह में प्रकाशमान किया (1:9,

10)। (6) हमें परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए मसीह में मीरास मिली है (1:11, 12)। (7) हम पर मसीह में आने पर आत्मा के साथ छाप लगाई गई। आत्मा का दान हमारे अन्तिम छुटकारे को ध्यान में रखते हुए हमारी मीरास का बयाना है और परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए है (1:13, 14)।

जे लॉकहर्ट

नये लोग बनने के लिए छुड़ाए गए (1:6-10)

एक आदमी से मसीही के रूप में अपने जीवन के बारे में कुछ बताने को कहा गया। उसने एक पल के लिए सोचा और फिर कहा, ''मैं वह नहीं हूं जो मुझे होना चाहिए; मैं वह नहीं हूं जो मैं होने वाला हूं, परन्तु, परमेश्वर का धन्यवाद हो, मैं वह नहीं हूं जो मैं होता था!''

क्या हम सभी ऐसी ही बात नहीं कह सकते? हमारे जीवन पूरी तरह से अलग होने चाहिए क्योंकि हम यीशु मसीह से मिल चुके हैं। मसीहियत इसके बाद के लिए बिल्कुल नहीं है। इसके लाभ हमारे लिए इस समय हैं, जब हम परमेश्वर के प्रकट किए गए भेद अर्थात कलीसिया जो कि उसी देह में भाग लेते हैं।

इफिसियों 1:6-10 में पौलुस ने छुटकारे की उस प्रक्रिया में जो हमें नये लोग बनने के लिए मुक्त करती है, पांच बातें बताईं। यह प्रक्रिया हमें मसीह के भेद में अर्थात उस देह में जिसे संसार की उत्पत्ति से पहले अनन्त जीवन के लिए चुना गया था भागीदार बनाने के योग्य बनाती है।

छुड़ाने वाला। पौलुस ने कहा कि हमें ''उस में'' छुटकारा मिला है (1:7)। किस में? आयत 6 के अनुसार यह वही है जिससे परमेश्वर पिता प्रेम करता है। वह बिना किसी संदेह के प्रभु यीशु मसीह ही है (देखें मत्ती 3:17; 17:5)।

कुलुस्सियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने कहा, ''उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा प्राप्त होती है'' (कुलुस्सियों 1:13, 14)।

यीशु परमेश्वर का प्रिय जन है और हमारा छुड़ाने वाला है। हमें उसमें स्वीकार किया जाता है। छुटकारे का केवल एक ही स्थान है: *मसीह में* जब परमेश्वर हमें चलाता और पाप की हमारी समस्या को मिटाता है। तभी वह हमें पाप के वश में से वापस खरीद लेता है, तब हमें उसमें जिससे वह प्रेम करता है ग्रहण किया जाता है।

यह तो बड़ी रोमांचकारी बात है! यीशु में होना परमेश्वर की ओर से ग्रहण किए जाना है। हमें अपने अनन्तकालिक भविष्य की चिंता करते हुए रातों को जागने की आवश्यकता नहीं है। जो लोग सचमुच में मसीह में हैं, उन्हें ठुकराया नहीं जाएगा, क्योंकि यीशु को उसके पिता द्वारा ठुकराया नहीं जा सकता।

मसीह सिद्ध छुड़ाने वाला है। (1) वह हमारा भाई है क्योंकि उसने मांस और लहू को पहना। हर प्रकार से वह हमारे जैसा बनकर वह हम में से एक बन गया (देखें इब्रानियों 2:17)। कोई स्वर्गदूत छुटकारे का दाम नहीं चुका सकता था। क्योंकि कोई स्वर्गदूत मनुष्य का सम्बन्धी नहीं है। यीशु हमारी तरह रहा; इस कारण वह हमारा बंधु छुड़ाने वाला बनने के योग्य है।

(2) वह दाम चुकाने के योग्य था। क्योंकि उसके पास हमें पाप से खरीदने की चीज़

थी। वह क्या था? उसका लहू। लैव्यव्यवस्था में यही सिद्धांत ठहराया गया था, जिसे इब्रानियों 9:22 में दोहराया गया: ''व्यवस्था के अनुसार प्राय: सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती।'' चुकाने के लिए अपने स्वयं के पाप का कोई कर्ज न होने के कारण मसीह हमारे कर्ज को चुकाने के लिए अपने लहू का इस्तेमाल कर पाया।

(3) वह हमारे लिए कीमत चुकाने को तैयार था। हम पढ़ते हैं, ''पिता इसलिए मुझ से प्रेम करता है, कि मैं अपना प्राण देता हूं, कि उसे फिर ले लूं। कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, बरन मैं उसे आप ही देता हूं: मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है: यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है'' (यूहन्ना 10:17, 18)।

यीशु हम में से एक था, उसके पास हमारे छुटकारे की कीमत थी, और वह इसे चुकाने को तैयार था। अद्‌भुत छुड़ाने वाला!

छुड़ाए हुए। आयत 7 कहती है, ''हम को उस में ... छुटकारा ... मिला है।'' ''हम'' किसे कहा गया है? यह आयत 4 वाले ''हमें ... उसमें'' ही है। ये सब जिन्हें परमेश्वर ने बीते सनातन काल में चुना, अब समय में वह उन्हें छुड़ाता है। उसने किन्हें छुड़ाए हुए होने और अपनी देह का भाग बनाने के लिए चुना? उन सब को, जिन्होंने मसीह में होना था यदि आप यीशु मसीह में हैं तो आप जान सकते हैं कि आपको पाप की सामर्थ और सज़ा से छुड़ा लिया गया है। दण्ड और पाप के वश से आपको छुड़ाने के लिए पूरी कीमत चुका दी गई है। आप स्वर्ग की ओर जा रहे हैं!

दर। छुटकारा कभी भी सत्ता नहीं रहा है। विनिमय दर छुड़ाई गई चीज़ के बराबर ही होनी आवश्यक है। आयत 7 आगे कहती है, ''हमको उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा ... मिला है।'' पाप से हमारी स्वतन्त्रता की कीमत यीशु मसीह का बहा लहू था। बिना यह कीमत चुकाए हुमारे पापों की क्षमा नहीं हो सकती थी। इससे कम में बात ही नहीं बननी थी।

पुरानी वाचा के अधीन पशुओं का लहू शुद्ध किए जाने का प्रतीक था। परन्तु मनुष्य को एक ही बार और सदा के लिए मुक्त करने के लिए केवल मनुष्य का लहू चाहिए था।

> और हर एक याजक तो खड़े होकर प्रतिदिन सेवा करता है, और एक ही प्रकार के बलिदान को जो पापों को कभी भी दूर नहीं कर सकते; बार-बार चढ़ाता है। पर यह व्यक्ति तो पापों के बदले एक ही बलिदान सर्वदा के लिए चढ़ाकर परमेश्वर के दहिने जा बैठा (इब्रानियों 9:11, 12)।

परमेश्वर के धर्मी और पवित्र व्यवस्था में आदेश था कि पाप की मजदूरी मृत्यु है। मैं आपके लिए नहीं कर सकता था, क्योंकि मुझे अपने दण्ड की कीमत चुकानी है; आप मेरे लिए नहीं मर सकते, क्योंकि आपको अपने दण्ड की कीमत चुकानी है। हमारे सिद्ध छुड़ाने वाले यीशु ने परमेश्वर के न्याय की कीमत के रूप में क्रूस पर एक ही बार अपना लहू बहा दिया ताकि पाप अपने शिकारों को छोड़ दे। हर रविवार प्रभु भोज को लेकर हम उस बड़ी कीमत की यादगार को दिखाते हैं, जो हमारे छुटकारे के लिए दी गई थी।

परिणाम। जब हम छुड़ाए जाते हैं तो क्या होता है? ''हम को उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा ... मिला है।'' छुटकारे का त्वरित परिणाम पूर्ण क्षमा है। अपने मन की गहराई में इस सच्चाई को डाल लें और आप आनन्द से भर जाएंगे!

कलवरी की कहानी पुकार पुकारकर कहती है कि परमेश्वर हमें क्षमा करने को तरसता है। हमारे पापों की क्षमा क्रूस पर हमारे छुड़ाने वाले की दृष्टि के द्वारा हमारे जीवनों में पाने की परमेश्वर की इच्छा का परिणाम था। अन्तिम भोज में यीशु ने स्वयं घोषणा की, ''... यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:28)।

इस्राएल की संतान इस अवधारणा को समझती थी। प्रायश्चित के दिन के समारोहों में दो बकरे पक्केहोते थे (लैव्यव्यवस्था 16:8)। एक बकरे को मार डाला जाता था और इसका लहू तम्बू में अनुग्रह के सिंहासन पर छिड़का जाता था। यह लहू पाप के दण्ड की कीमत को दर्शाता था। फिर दूसरे बकरे के सिर पर हाथ रखते हुए महायाजक लोगों के पापों का अंगीकार करता था। यह ऐसे होता था जैसे उनके पाप इस पशु के सिर डाल दिए जा रहे हों। फिर वे बकरे को जंगल में छोड़ देते और यह कभी वापस नहीं आता था (देखें लैव्यव्यवस्था 16:21)।

कारण। परमेश्वर हमारे लिए यह सब क्यों करता है? उसके कार्यों के पीछे क्या कारण है?

> उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उस ने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे (1:9, 10)।

इसका कारण एकता है। परमेश्वर अपनी सृष्टि को अपने साथ एकता और संगति में वापस लाना चाहता था। अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के पाप करने पर जो सम्बन्ध टूटा था; कलवरी के द्वारा यीशु ने परमेश्वर और मनुष्य के बीच पाप की बाधा को गिरा दिया। एक बार फिर से सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि एक सुन्दर सम्बन्ध का आनन्द ले सकते हैं।

सारांश। हमारे जीवन किसी समय पाप से घायल थे। हम परमेश्वर से अलग किए हुए थे, परन्तु उसके अनुग्रह के द्वारा हमारे पाप की समस्या पर काबू पा लिया गया है। मसीही लोगों के रूप में हम जीवन की बहुतायत और परमेश्वर की संगति का आनन्द लेने को मुक्त हैं। स्वर्ग की ओर जाने वालों के रूप में हम आज स्वर्ग की छोटी सी झलक का आनन्द ले सकते हैं।

हमारी मीरास का आधार (1:10-13)

हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं कैसे प्राप्त होती हैं? हम उसके वारिस कैसे बन सकते हैं? इफिसियों 1:10, 11 कहता है, ''उसी में हम ... मीरास बनें।'' यहां पर अनुवाद हुआ यूनानी शब्द ''पहले से ठहराए'' या ''चुने गए'' (NIV) आयत 4 में अनुवाद हुए शब्द ''चुन लिया'' से अलग है। पौलुस ने नये नियम के अपने सारे लेखों में ''मीरास'' अनुवाद किए गए संज्ञा के क्रिया रूप का इस्तेमाल किया। इसलिए उसके कहने का विशेष अर्थ था कि हमें एक मीरास पाने के लिए चुना गया था।

हमें यह मीरास पाने के लिए कहां चुना गया था? पौलुस ने कहा कि ''उसी में'' अर्थात मसीह में। आयत 3 के अनुसार यहीं पर हर प्रकार की आत्मिक आशीष मिलती है। परमेश्वर की मीरास सनातन काल से केवल उसी पुरुष या स्त्री के लिए योजना बनाई गई थी, जिसका मसीह के साथ व्यापक सम्बन्ध है। उसे छोड़ हम परमेश्वर से किसी बात की उपेक्षा नहीं कर सकते।

यह कब होता है? आत्मिक रूप में दिवालिया हुए पुरुष या स्त्री के लिए इन से बढ़कर

कठिन प्रश्न नहीं हो सकते: ''मैं मसीह में कैसे आता/आती हूं?'' और ''मैं परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का वारिस कब बनता/बनती हूं?''

पापी व्यक्ति मसीह के बाहर है? कोई पश्चात्तापी पापी मसीह के बाहर होने से *मसीह में* होने के लिए कब जाता है? पौलुस ने स्पष्ट कहा कि यह बपतिस्मा लेने के समय में होता है, ''क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने *मसीह यीशु में बपतिस्मा* लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया?'' (रोमियों 6:3)। जब कोई व्यक्ति बपतिस्मा लेता है तो परमेश्वर उसे अपने पुत्र में रख देता है और उसे उसके धन का वारिस बना देता है।

पौलुस ने कहा, ''क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने *मसीह में* बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है'' (गलातियों 3:26, 27)। विचार फिर वही है। परमेश्वर हमें मसीह में कब रखता है? हम ने मसीह को कब पहना? तब जब हमने उसमें बपतिस्मा लिया। जल में बपतिस्मा यीशु की आज्ञा के अनुसार समय के उस ऐतिहासिक बिन्दु को दर्शाता है जब परमेश्वर किसी को वारिस बनाता है। यदि आपने नये नियम की आज्ञा के अनुसार बपतिस्मा लिया है तो आप मसीह में हैं और उसके साथ संगी वारिस भी। यदि नहीं लिया है तो निष्कर्ष से बचा नहीं जा सकता। आप मसीह में नहीं हैं और आप परमेश्वर की मीरास के भागीदार नहीं होंगे।

यह किसके लिए होता है? पौलुस ने पहला वास्तविक संकेत दिया कि परमेश्वर के भेद में सब प्रकार के लोग हैं जो 1:12, 13 के उसी आधार पर मीरास पाते हैं:

> कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उस की महिमा की स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

यहूदी हो या अन्यजाति, पुरुष हो या स्त्री, दास हो या स्वतन्त्र, धनी हो या निर्धन, सब को मीरास मिलने का एक ही आधार है। मीरास *मसीह में* ही हो। एक व्यक्ति को अगले व्यक्ति के साथ बराबर ग्रहण किया जा सकता है परन्तु सब को केवल मसीह में ग्रहण किया जाता है।

परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं (1:11-14)

प्रतिज्ञाएं, प्रतिज्ञाएं, प्रतिज्ञाएं! कौन है जिसने इन में से हज़ारों प्रतिज्ञाओं को नहीं सुना? प्रतिज्ञाएं विज्ञापन देने वालों, सरकारी अधिकारियों, पतियों और पत्नियों, भाइयों और बहनों, बेटों और बेटियों द्वारा रोज की और तोड़ी जाती हैं। केवल एक है जो अपने वचनों या प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। ''जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है'' (इब्रानियों 10:23); ''... जिस बात की उसने प्रतिज्ञा की है, वह उसे पूरा करने में भी समर्थ है'' (रोमियों 4:21; देखें 2 पतरस 3:9)।

बीते सनातनकाल में, समय के आरम्भ होने से पहले, परमेश्वर ने अपने पुत्र में विश्वासियों की एक देह का विचार बनाया। उसने उस देह को वर्तमान समय में कलवरी पर अपने पुत्र के लहू बहाने के द्वारा अस्तित्व में लाया। जब परमेश्वर ने उन्हें जो उसकी देह में हैं चुना और उन्हें छुड़ाने के लिए पहले से ठहराया तो उसने मृत्यु या पराजय के बिना अनन्त जीवन सहित हमें

कुछ अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं दीं। उन प्रतिज्ञाओं का पूरा होना परमेश्वर की देह अर्थात कलीसिया के भावी पहलू अर्थात मसीही मीरास को बनाता है।

''क्योंकि परमेश्वर की जितनी प्रतिज्ञाएं हैं, वे सब उसी में हां के साथ हैं'' (2 कुरिन्थियों 1:20)। परमेश्वर किसी भी प्रतिज्ञा से जो उसने हमारे साथ की है पीछे नहीं मुड़ता।

आत्मा की छाप लगी (1:13)

हम पक्का कैसे जान सकते हैं कि हमें परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं मिलेंगी? आयत 13 कहती है, ''... तुम पर ... प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।'' परमेश्वर हमारे अन्दर अपने पवित्र आत्मा को रखकर हमें अपनी प्रतिज्ञाओं की गारंटी देता है। 2 कुरिन्थियों 1:21, 22 और इफिसियों 4:30 में पौलुस ने भी इस अनोखी, ईश्वरीय छाप की बात की। परमेश्वर मसीह में बपतिस्मा लेने के समय हमें अपनी देह में रखते हुए हम पर अपनी ईश्वरीय छाप भी रखता है। वह छाप पवित्र आत्मा है।

छाप लगने का क्या अर्थ है? बाइबल के समयों में छाप के चार अर्थ होते थे।

प्रमाणिकता। छाप के साथ किसी चीज़ को चिह्नित करना प्रमाणिकता का चिह्न था। 1 राजाओं 21 में इज़ेबेल ने अपने पति राजा अहाब के लिए नाबोत की दाख की बारी हथियाने के लिए षड्‌यन्त्र रचा। अपनी योजना को प्रामाणिक दिखाने के लिए इज़ेबेल ने, ''अहाब के नाम से चिट्ठी लिखकर उसकी अंगूठी की छाप'' लगाई (1 राजाओं 21:8)। यह छाप असली होने का सरकारी चिह्न था।

हमें कैसे मालूम कि हम परमेश्वर के प्रमाणिक पुत्र और उसकी प्रतिज्ञाओं के सही वारिस हैं? पौलुस ने हमें बताया कि हमारे अन्दर पवित्र आत्मा है जो प्रामाणिकता में परमेश्वर की अपनी छाप है (रोमियों 8:9)।

स्वामित्व। बाइबल के समयों में छाप का इस्तेमाल स्वामित्व के प्रमाण के लिए भी किया जाता था। यिर्मयाह की इस घोषणा के बाद कि परमेश्वर इस्राएल को नष्ट कर देगा, परमेश्वर ने उसे याद दिलाया कि इस्राएल सत्तर वर्षों में निर्वासन से लौट आएगा। यह ज़मीन में निवेश करने का एक सुनहरी अवसर था! नबी ने लिखा, ''मैं ने उस अनातोत के खेत को अपने चचेरे भाई हनमेल से मोल ले लिया। ... और मैं ने *दस्तावेज़* में दस्तख़त और *मुहर* हो जाने पर, गवाहों के साम्हने वह चान्दी कांटे में तौलकर उसे दे दी'' (यिर्मयाह 32:9, 10)। सत्तर साल बाद यिर्मयाह की संतान उस दस्तावेज की मोहर को तोड़कर यह साबित कर पाई कि भूमि का वह टुकड़ा उन्हीं का था। मोहर में सौदे के पूरा होने का संकेत दिया।

पवित्र आत्मा की छाप यह संकेत देती है कि छुटकारे की कीमत पूरी चुका दी गई है और अब हम परमेश्वर के हैं। हमें दाम देकर खरीदा गया था और फिर यह साबित करने के लिए कि हम उसके हैं मोहर लगा दी गई।

सुरक्षा। मोहर सुरक्षा के कारणों से भी लगाई जाती थी। जब दानिय्येल को शेरों की मांद में रखा गया तो दरवाजे के आस-पास मोम गिरा दी गई होगी और फिर राजा या उसके कुलीनों में से किसी की अंगूठी लेकर उस पर मोहर लगा दी गई होगी। छोड़ी गई आकृति आधिकारिक चिह्न के रूप में मानी जाती थी। दरवाजा सुरक्षित था और केवल अधिकार वाले व्यक्ति को ही

यह आदेश देने का अधिकार था कि मोहर तोड़ दी जाए।

ऐसी ही घटना यीशु की मृत्यु में देखी जा सकती है जब यहूदियों ने उसकी कब्र पर मोहर लगा दी थी। यह उसके चेलों द्वारा चोरी से कब्र को बचाने के लिए सुरक्षा का एक प्रयास था।

यदि परमेश्वर ने किसी छुड़ाए हुए जीवन को लेकर अपने आत्मा से उस पर छाप कर दी है, तो उस मोहर को तोड़ने का अधिकार किसे है? किसी को नहीं! हमारी मीरास सुरक्षित है।

दिया गया अधिकार। मोहर का अन्तिम इस्तेमाल दिए गए अधिकार अर्थात किसी दूसरे के नाम में काम करने के अधिकार का संकेत देने के लिए था। इसका एक उदाहरण एस्तेर में मिलता है: ''तब राजा ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से उतारकर ... हामान को, जो यहूदियों का वैरी था दे दी'' (एस्तेर 3:10)।

हामान मोर्दके और अन्य यहूदियों से पीछा छुड़ाने के लिए चाल चल रहा था। उसने यहूदियों को देश के लिए खतरा दिखाने के लिए राजा को एक झूठी कहानी बताई। राजा ने अपने हाथ की अंगूठी हामान को दे दी और उसे अपने नाम में जो भी उसे ठीक लगे वह करने को कहा। बाद में जब हामान की चाल बेनकाब हो गई तो वही अधिकार मोर्दके को दिया गया। राजा ने मोर्दके से कहा:

> सो तुम अपनी समझ के अनुसार राजा के नाम से यहूदियों के नाम पर लिखो, और राजा की अंगूठी की छाप भी लगाओ; क्योंकि जो चिट्ठी राजा के नाम से लिखी जाए, और उस पर उसकी अंगूठी की छाप लगाई जाए, उसको कोई भी पलट नहीं सकता (एस्तेर 8:8)।

मोर्दके को अपनी छाप देकर राजा ने शाही नाम में उसके लिए काम करने का पूरा अधिकार दे दिया।

विश्वासी के लिए इस सब का क्या अर्थ है? यूहन्ना 16:23 में, अपने प्रेरितों को यह बताने के बाद कि उन्हें पवित्र आत्मा मिलेगा, यीशु ने उन्हें अपने नाम में काम करने का अधिकार देने की प्रतिज्ञा की। अपने जीवनों पर ईश्वरीय छाप होने के कारण अर्थात अपने ऊपर परमेश्वर के पवित्र आत्मा के कारण हम स्वयं यीशु के दिए गए अधिकार पर पिता से कुछ भी मांग सकते हैं।

वारिसों के रूप में हमारे मनों में पवित्र आत्मा का होना हमारी गारंटी है कि हमें वह मिलेगा जिसकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने हम से की है। पौलुस ने कहा कि आत्मा परमेश्वर की पेशगी है, ''वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो'' (इफिसियों 1:14)। परमेश्वर ने अपने चुने हुओं को पहले ही आत्मिक मीरास दे दी है; हमारे अन्दर पवित्र आत्मा परमेश्वर की पेशगी है। जो यह सुनिश्चित करती है कि बाकी चुका दिया जाएगा। परमेश्वर ने हमारे अंदर अपने आत्मा को हमें केवल अपने लोगों के रूप में चिह्नित करने के लिए नहीं बल्कि हमें यह यकीन दिलाने के लिए भी किया है कि हमें वह सब मिलेगा जो उसने हमें देने की प्रतिज्ञा की है।

सारांश। परमेश्वर का लक्ष्य अन्त में हमारा छुटकारा है। हमें पहले ही पाप के दण्ड और सामर्थ से छुड़ा लिया गया है। एक दिन हमें पाप की उपस्थिति से ही छुड़ा लिया जाएगा। अब हमारी आत्माओं को छुड़ाया गया है परन्तु एक दिन हमारी देहों को कभी न मिटने के लिए उठा लिया जाएगा। तब हमारा छुटकारा पूर्ण हो जाएगा (देखें रोमियों 8:23)। तब हमार मीरास का

लक्ष्य पूरी तरह से पूरा हो जाएगा, जब परमेश्वर हमें छुड़ाई हुई अर्थात अविनाशी देहें देगा जिनके साथ हम अनन्तकाल तक उसकी मीरास के धन का अनन्द ले सकेंगे। हमें जिसकी प्रतिज्ञा की गई है वह मिलेगा!

बीते सनातनकाल से भविष्य के सनातनकाल तक, हमें मसीह में पुत्र होने के लिए चुना गया है। वर्तमान में हमें पाप से छुड़ाया गया है, यीशु के स्वभाव में बदलने के लिए स्वतन्त्र होने के लिए सनातन भविष्य में हमें परमेश्वर के धन के अनुसार एक मीरास मिली है। हमारे चुने जाने का परिणाम हमारे शानदार परमेश्वर की महिमा के लिए स्तुति है!

क्रिस बुलर्ड

प्रतिज्ञा की छाप (1:13)

परमेश्वर ने प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा के साथ मसीही लोगों पर छाप लगाई है, परन्तु व्यावहारिक रूप में इसका क्या अर्थ है?

1. हमें मसीही लोगों के रूप में पूरी मीरास मिलती है।
2. हमें जो कुछ परमेश्वर हमें बताना चाहता है उसे समझने और जो कुछ वह हम से करवाना चाहता है उसे करने के लिए भीतरी मनुष्य में परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सामर्थ से मजबूत किया जाता है (3:16-21)।
3. हम पवित्र आत्मा का फल लाते हैं (गलातियों 5:22, 23)।
4. हम शरीर पर विजय पाकर असली जीवन का आनन्द लेते हैं (रोमियों 8:13)।
5. हमें मुर्दों में से जी उठने का आश्वासन दिया गया है (रोमियों 8:11)।
6. हमें परेशानी के समयों में सहायता मिलती है (रोमियों 8:26, 27)।
7. हम यीशु के हाथों में सुरक्षित हैं।

यूहन्ना 10:27, 28 में यीशु ने अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं की, जब उसने कहा, ''मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं, और वे कभी नाश न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।'' यूनानी भाषा में ''सुनती,'' ''जानता,'' ''पीछे-पीछे चलती,'' और ''देता'' सब वर्तमान क्रिया सांकेतिक हैं जिसका अर्थ है कि ''कोई बात जो बोलने वाले के कहने के समय हो रही है।''[88] वर्तमान क्रिया सांकेतिक ''कार्य के जारी रहने की ओर ध्यान दिलाने को कहता है।''[89] इसलिए यीशु कह रहा था, ''मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती रहती हैं, और मैं उन्हें जानता रहता हूं, और वे मेरे पीछे-पीछे चलती रहती हैं; और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता रहता हूं; और वे कभी नष्ट नहीं होंगी।'' सुनती रहने और पीछे-पीछे चलती रहने वाली भेड़ों को कभी नष्ट न होने की प्रतिज्ञा है। यदि कोई भेड़ सुनना और पीछे चलना बंद कर दे तो वह उस प्रतिज्ञा और छाप की सुरक्षा से आगे निकल जाती है। यह सुझाव देना कि मसीह में हमें कोई सुरक्षा नहीं है उसकी इस प्रतिज्ञा को अनदेखा करना है। यह सुझाव देना कि सुरक्षा की प्रतिज्ञा बिना शर्त के है इसमें इस्तेमाल क्रियाओं के कार्य को अनदेखा करना है। क्या मसीही व्यक्ति के पास सुरक्षा है? बिल्कुल पक्का! क्या उसकी सुरक्षा बिना शर्त के है! बिल्कुल नहीं।

अपनी आशिषों पर ध्यान लगाना

मसीही जीवन जीते हुए आइए अपनी आशिषों को गिने और ...

- उन असंख्य ढंगों पर विचार करें, जिनसे परमेश्वर ने हमे आशिषें दी हैं।
- उन आशिषों पर ध्यान लगाएं जो केवल हमें इसलिए मिली हैं क्योंकि हम संसार में रहते हैं।
- बड़ी से बड़ी आशिषों पर विचार करें जो ''मसीह में'' आत्मिक आशिषें हैं। इन आशिषों से हमें आत्मिक, बहुतायत का अनन्त जीवन मिलता है।

क्या आप ''मसीह में'' हैं जहां यह आत्मिक आशिषें पाई जाती हैं?

जे लॉकहर्ट

टिप्पणियां

[1]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कंकॉर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 104. [2]मेरविन आर. विंसेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 3, *द एपिस्टल्स ऑफ पॉल* (पृष्ठ नहीं: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1890; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1946), 364. [3]एल्बर्ट बार्नस, *नोट्स ऑन द न्यू टैस्टामैंट: इफिसियंस, फिलिपियंस एंड कोलोसियंस,* संपा. रॉबर्ट फ्रयू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965), 16. [4]पॉल टी. बटलर, *द गॉस्पल ऑफ जॉन,* अंक 1, बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1961), 21. [5]होमेर हेली, *दैट यू मे बिलीव: स्टडीज़ इन द गॉस्पल ऑफ जॉन* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1973), 20. [6]गेरल्ड एफ़. हाअथॉर्न, *फिलिपियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 43 (वाको, टैक्ससः वर्ड बुक्स, 1983), 84. [7]स्पायरस जोड्इट्स, संपा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामैंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992) 937, 963. [8]आर. सी. एच. लैंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द गलेशियंस, टू द इफिसियंस एंड टू द फिलिपियंस* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946; रिप्रिंट, मिनियापुलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1961), 392. [9]टी. आर. एप्पलबरी, *स्टडीज़ इन सेकंड कोरिंथियंस,* बाइबल स्टडी टैक्सटबुक सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस, 1971), 19. [10]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकॉगो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 388.

[11]वही, 305. [12]डी. एल. मूडी; रूथ पैक्ससन, *द वैल्थ, वॉक एंड वारफेयर ऑफ द क्रिश्चियन* (ओल्ड टैप्पन, न्यू जर्सी: फलेमिंग एच. रेवल कं., 1939), 31. [13]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 31; बाउर, 515 भी देखें। [14]वुएस्ट, 31; बाउर, 561 भी देखें। [15]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 24. [16]वुएस्ट, 33. [17]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामैंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:249 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [18]वुएस्ट, 33-34. [19]सैलमण्ड, 250. [20]लैंसकी, 360.

[21]सैलमण्ड, 251. [22]रॉबर्ट यंग, *यंग'स अनालिटिकल कन्कॉर्डेंस टू द बाइबल,* 22वां अमेरिकी संस्क., संशो. विलियम बी. स्टीवनसन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 14. [23]*द इंटरनैशनल बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संपा. जेम्स ऑर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1960), 1:58 में टी. एस. रीस, ''एडॉप्शन।'' [24]सैलमण्ड, 251. [25]वही, 250-51. [26]द ज़ौंडरवन पिक्टोरियल बाइबल डिक्शनरी, संपा. मैरिल सी. टैनी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1963), 15 में एमेट

रस्सल, ''एडॉप्शन।'' [27]वुएस्ट, 36. [28]वही, 36–37. [29]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर इंग्लिश रीडर: गलेशियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 115. [30]वुएस्ट, *इफिसियंस एंड कोलोसियंस,* 37.

[31]वही। [32]सैलमण्ड, 252. [33]जॉर्ज ई. विग्राम, *द इंग्लिशमैन'स ग्रीक कंकॉर्डेंस ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* 9वां संस्क. (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1903), 322. [34]विंसेंट, 365. [35]लिंकोन, 27. [36]ज़ोडिएट्स, 631, 863. अनिश्चित भूतकाल का इस्तेमाल कालांतर में हुई क्रिया की बात करने के लिए किया जाता है। [37]वही, 631, 869. [38]बाउर, 117. [39]लेंसकी, 366; बाउर, 156 भी देखें। [40]बाउर, 770; सैलमण्ड, 255; लेंसकी, 367.

[41]सैलमण्ड, 255. [42]वुएस्ट, *इफिसियंस एण्ड कोलोसियंस,* 41. [43]वही। [44]सैलमण्ड, 256. [45]बाउर, 805. [46]सैलमण्ड, 257. [47]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:451–52 में जी. डब्ल्यू. बार्कर, ''मिस्ट्री।'' [48]वुएस्ट, *इफिसियंस एण्ड कोलोसियंस,* 44; बाउर, 447 भी देखें। [49]बाउर, 511. [50]वही, 404.

[51]वुएस्ट, *इफिसियंस एण्ड कोलोसियंस,* 44. [52]वही; बाउर, 697 भी देखें। [53]लिंकोन, 31. [54]बाउर, 830, 497. [55]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. व संपा. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 673. [56]*साइक्लोपीडिया ऑफ बिब्लिकल, थियोलॉजिकल, एंड एक्लेस्टिएस्टिकल लिटरेचर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 3:692 में जॉन मैक्लिंटॉक एंड जेम्स स्ट्रांग, सम्पा., ''फुलनेस।'' [57]सैलमण्ड, 260. [58]बाउर, 65. [59]ज़ोडिएट्स, 886. [60]सैलमण्ड, 261.

[61]हेनरी अल्फोर्ड, *द ग्रीक टैस्टामैंट,* अंक 3, *गलेशियंस—फिलेमोन,* 4था संस्क. (कैम्ब्रिज: डेटन, बेल, एंड कं., 1865), 76. [62]लिंकोन, 33. [63]जोडिएट्स, 928; बाउर, 548 भी देखें. [64]सैलमण्ड, 263. [65]लिंकोन, 35–36. [66]सप्तति दूसरी शताब्दी ई. पू. के लगभग मिस्र में इब्रानी पुराने नियम के यूनानी अनुवाद को कहा जाता है। [67]बाउर, 869. [68]*साइक्लोपीडिया ऑफ थियोलॉजिकल, बिब्लिकल, एंड एक्लेस्टिएस्टिकल लिटरेचर* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1970), 8:815 में देखें जॉन मैक्लिंटॉक एंड जेम्स स्ट्रांग, सम्पा., ''पर्पज़ ऑफ़ गॉड।'' [69]विग्राम, 361–62. [70]ज़ोडिएट्स, 897.

[71]ज़ोडिएट्स, 897. [72]वुएस्ट, *इफिसियंस और कोलोसियंस,* 48. [73]सैलमण्ड, 265–66; वुएस्ट, *इफिसियंस एण्ड कोलोसियंस,* 48; विंसेंट, 368–69. [74]लेंसकी, 380; लिंकोन, 37. [75]लेंसकी, 382. [76]थेयर, 26. [77]बुलिंगर, 339. [78]लेंसकी, 383. [79]*द न्यू शैफ-हरज़ोग इन्साइक्लोपीडिया ऑफ़ रिलिजियस नॉलेज,* संपा. सैमुएल मैकुयली जैक्सन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1951), 1:248 में ''सील्ड।'' [80]किरसोप लेक, अनु., *द अपोस्टलिक फादर्स,* द लोयब क्लासिकल लाइब्रेरी, संपा. टी. ई. पेज, et al. (कैम्ब्रिज, मैसाचुएट्स: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1913), 1:141, 2:263.

[81]ज़ोडिएट्स, 893. [82]लिंकोन, 41. [83]वही, 42. [84]विलियम डी. माउंस, *पास्टरल एपिस्टलज़,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 46 (नैशविल्ले: थामस नैल्सन पब्लिशर्स, 2000), 529. [85]वही। [86]आयतें 7, 11, और 13 (दो बार) में यूनानी धर्मशास्त्र का मूल अनुवाद ''जिस में'' है। [87]अलग-अलग समयों और स्थानों के सम्माननीय धर्मशास्त्रियों में जिन्होंने पहले से ठहराए होने के प्रश्न पर बहस की है; उत्तरी अफ्रीका के चौथी सदी में हिप्पो के अगस्टिन और उसका कैल्ट समकालीन पिलाग्युस; ग्यारहवीं सदी में कैंटरबरी के अनसेम; तेरहवीं सदी के इटालियन प्रीस्ट थॉमस अक्विनस; सोलवीं सदी के फ्रांसीसी सुधारक जॉन कैल्विन, सोलवीं सदी के डच सेवक, जेकोबस आरमिनियुस और अठारहवीं सदी के ब्रिटिश एंगलिकन मनिस्टर जॉन वैसली हैं। पहले से ठहराए जाने बनाम स्वेच्छा पर बहस आज भी डिनोमिनेशनों में पाई जाती है। [88]ज़ोडिएट्स, 869. [89]जे. ग्रेशम मेचहन, *न्यू टैस्टामैंट ग्रीक फॉर बिगिनर्स* (न्यू यॉर्क: मैक्मिलन कं., 1957), 21–22.